प्रतिकार एखन बाँकी अछि

(मैथिली कविता-संग्रह)

रामकृष्ण परार्थी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना/दिल्ली

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-48495-78-5

प्रतिकार एखन बाँकी अछि
(मैथिली कविता-संग्रह)

© रामकृष्ण परार्थी

प्रथम संस्करण : 2022
द्वितीय संस्करण : 2025
मूल्य : 200 रु.

आवरण : प्रसून कुमार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-5
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
दिल्ली एनसीआर : प्लॉट एच. एस.-2, ब्लॉक एफ
सेक्टर-अल्फा-2, ग्रेटर नोएडा-201308
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Pratikar Ekhan Banki Achhi
Maithili Poems By **Ram Krishna Pararthi**
Second Edition : 2025, Price : Rs 200/-

पूज्य माँ श्रीमती मुनर देवी
आ
पूज्य सासु माँ श्रीमती सुकुमारी देवी
कें
अपन ई कृति समर्पित।

—रामकृष्ण परार्थी

हजार बरससँ पियासल कान लेल कविता

चाहे कतबो भारी कट्टर ब्राह्मणवादी मैथिल होथि, हुनका लोकनिकेँ नीक जकाँ बुझल रहैत छनि जे मैथिलीमे लिखबाक आविष्कार ब्राह्मण नहि कयने रहथि, दलित लोकनि कयने रहथि। ब्राह्मणक लिखा-पढ़ीक भाषा संस्कृत रहनि। बौद्ध धर्मक प्रतापसँ दलित लोकनि जखन लिखा-पढ़ीवला बात सभ करय लगला तँ अप्पन भाषामे केलनि, कारण संस्कृतक प्रतिरोध हुनका खूनमे रहनि। ओ ओइ जनता धरि अपन भावना पहुँचेबाक लेल कलम उठेलनि, जकर ज्ञान-विनिमयक साधन लिखित शब्द छलैके नहि। एकर तँ सैकड़ो-हजारो बरसक बाद ओइ लक्षित परिवार सभमे एहेन पीढ़ीक आगमन भेलै जे खनदानमे पहिल बेर अ आ, क ख लिखब सिखलक, पहिल बच्चा भेल पाँच हजार बरसक इतिहासमे जे साक्षर भेला उत्तर मैट्रिक पास केलक।

बारह सए वर्ष पहिने मैथिलीमे कविताक सृजन शुरू भेल। छः सए वर्ष धरि तँ ई एकछाहा दलित-वंचितक अभिव्यक्तिक भाषा रहल, बादमे ब्राह्मण लोकनि सेहो मैथिलीमे लिखय लगला। तहिया जे ब्राह्मण मैथिलीमे लिखलनि तिनकर भारी निन्दा भेल, हुनकर बहिष्कार कयल गेल। एकर सभसँ पैघ उदाहरण स्वयं विद्यापति छथि। मुदा, आगू एहेन समय आएल जे ब्राह्मण लोकनि मैथिलीमे गीत लीखि राजाक दरबारमे मनोरंजन करथि आ एवंप्रकारेँ हुनका सभक रोजी-रोटीक ई साधन बनल। ठीक तहिना, दलित लोकनि सेहो नाचमे मैथिली गीत गाबिक' अपन रोजी-रोटी पाबथि। एहि दुनू वर्गसँ भिन्न छली स्त्रीगण लोकनि, जिनकर गीतक भाषा मैथिली छल, आ यैह गीत सभ मिथिलाक संस्कृतिकेँ रूपाकार प्रदान केलक। एहि स्त्रीगण वर्गमे वर्ण-विभाजन नहि छल, फलस्वरूप लोकायत परम्परा मिथिलाक सभ वर्ण, सभ जातिक घर-घरमे प्रवेश पयलक। आइयो शास्त्राचार पर लोकाचार अपन बढ़त बनौने अछि।

असल खुराफात शुरू भेल बीसम शताब्दीक आरम्भमे आबिक'

जखन प्रिन्टिंग प्रेससँ मैथिलीक सम्बन्ध जुड़ल, विभिन्न जातिक जातीय महासभा बनल, इतिहास आ आलोचना साहित्यक उद्भव भेल। ब्राह्मण लोकनिक जातीय महासभा मैथिलीकेँ अपन भाषा घोषित क' देलक। राजा स्वयं उद्घोषक रहथि। मैथिली रातारातो राजाक भाषा बनि गेल, शोषकक भाषा बनि गेल। आब ई प्रजाक भाषा नहि रहल, शोषितक भाषा नहि रहल। मानकीकरणक नाम पर दू जिलाक ब्राह्मण लोकनि एकरा अपन बपौती बना लेलनि। आब जँ मैथिली लिखबामे कोनो लाभ छल, सम्मान वा पुरस्कार छल तँ ताहि पर ओही गनल-चुनल जिलाक एक जातिक कब्जा बनल रहलैक। आन जातिक लोक शुरूमे विरोध केलक, बादमे मैथिली नामेसँ निस्पृह भ' गेल। अइ कविता-संग्रहक कवि एकठाम कहै छथि– 'हमर कतेको मित्र छथि हमरासँ नाराज/हुनका सभकेँ बुझना जाइत छनि जे हम/मैथिली लिखिक' अप्रत्यक्ष रूपसँ/बढ़ावा द' रहल छियै ब्राह्मणवादकेँ।' मतलब, एहेन स्थिति बनि गेल अछि जे मैथिली लिखबाक अर्थ ब्राह्मणवादक समर्थक होयब भ' गेल।

एहि आधुनिक बौद्धिक लोकनिमे बेइमानीक आलम ई छल जे जाहि मिथिलामे लाख खोजल गेला पर विद्यापति-गीतक मात्र दूटा पाण्डुलिपि भेटल, ओतहि यदि कबीरक मैथिली पदावलीक खोज कयल गेल रहितय तँ कम-सँ-कम दू सए पाण्डुलिपि भेटितय। मुदा से ओ लोकनि किए करितथि? कबीर तँ पराया रहथि। ब्राह्मणवादक विरोधी रहथि। आ, मैथिली घोषित रूपसँ ब्राह्मणक भाषा छल। ओ लोकनि कबीरकेँ, कबीरक परम्पराकेँ जकर जड़ि सिद्धसाहित्य धरि जाइ छलै, कोना मानि द' सकै छला?

आब जखन एहेन लोकक हाथमे कलम अयलैक अछि जे कबीरकेँ अप्पन मानै छथि, तँ की अहाँकेँ लगैत अछि जे रचनाक परिप्रेक्ष्य, रचनाक तथ्य आ भाषा वैह रहि जेतै जे पछिला सए बरसमे विविध कुचक्र रचिक' कायम क' लेल गेलैक अछि? कबीरक धार्मिक चेतना केवल आध्यात्मिक नहि छल, ओ तँ पचासो प्रतिशतसँ कम छल, बाँकी छल सामाजिक चेतना। कबीर मानैत छला जे, जे ब्रह्माण्डमे अछि ठीक सैह पिंडमे सेहो अछि। तखन कहू जे ई कोना हेतै जे कोनो जाति उच्च, कोनो नीच, कोनो पूज्य तँ कोनो अछोप भ' जेतै? अहाँ अपन कपार पीटि सकैत छी जे उपनिषद् सेहो सैह

मानैत अछि। मुदा उपनिषद्केँ अपन मूल मान'बला ब्राह्मणवाद जातिवादक जन्मदाता सेहो थिक आ परिपालक, परिपोषक सेहो।

स्पष्ट क' दी जे ब्राह्मणवादक जन्मदाता भने ब्राह्मण होथि मुदा एकर गछाड़मे पचपनियाँ सेहो छथि, दलित सेहो। ने तँ ई कोना होइतय जे दू सए के करीब संख्यामे दलित-पचपनियाँ लोकनि मैथिलीमे लिखैत ठीक-ठीक वैह बात, ओही भंगिमामे लिखि रहला अछि जे ब्राह्मणवादक इष्टसिद्धिमे साधक छैक। एहेन दलित लोककेँ अहाँ ब्राह्मण सभामे अध्यक्षता करैत सेहो देखि सकै छियनि, सम्मान पबैत सेहो। परार्थी दलितक मुँहेँ ब्राह्मणक बात सुनिक' दुखी होइ छथि। एहेन गद्दारी क' क' पुरस्कार प्राप्त केनिहार पर ओ लिखै छथि– 'आइ द्रोणक वंशज द' रहल छैक/एकलव्यक उत्तराधिकारीकेँ पुरस्कार/शर्त बस यैह टा/जे आब अहाँ धनुष-वाण चलबै के/नहि राखैत छी अधिकार/आ ई स्वार्थी, समाजक गद्दार सभ/एहि शर्तकेँ क' रहल छै हँसी-खुशी स्वीकार/धिक्कार अछि धिक्कार।'

एहि संग्रहमे एहनो लोक सभ पर कविता छैक, मानसिक गुलामीसँ ग्रस्त एहेन दलित जकरा अपन मालिकक समझाओल हरेक बात सही लगैत छैक, टीक आ टीकामे ओ अपन प्रतिष्ठा देखैत अछि आ ओकरा हिन्दू राष्ट्र कल्याणकारी बुझना जाइत छैक। एकटा कवितामे परार्थी कहै छथि– 'द' देने छै मालिक वर्णव्यवस्थाक सेहो किछु ज्ञान/बना लेने छैक अपन मानसिक गुलाम/नीकसँ समझा देने छैक ब्राह्मणक सेवासँ हेतौक स्वर्ग/अगिला जनममे तहूँ भ' सकैत छेँ गिरहत/ई जन्म छौक तोहर पछिला जन्मक चूक/दोसराकेँ कहलासँ आगि नहि मूत।' अपना समाजक मुक्ति लेल परेशान कवि ई दृश्य देखिक' झूर-झमान रहैत अछि जे– 'डोमसँ चमार छुआइत अछि।/चमारसँ मुसहर/मुसहरसँ धोबी-दुसाध/अदौ कालसँ उघैत आबि रहल अछि दोसराक देलहा/पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास/एहना स्थितिमे कोना हेतै दलितक विकास?' ई एकटा सूत्र थिक जाहिसँ हमसभ पकड़ि सकै छी जे दलित समुदायक दीना-भद्रीक हत्यामे दलिते समुदायक लोकदेवता सलहेस कोना ब्राह्मणवादक सहायक भेल रहथि!

मैथिली ककर भाषा छी? के अछि जकर धार्मिक कृत्याचारोक भाषा मैथिलिये छिऐ? निश्चित रूपसँ ब्राह्मण लोकनि तँ नहिये टा थिका। हुनकर

पूजा-पाठ तँ वैदिक भाषामे, संस्कृतमे होइत अछि। मुदा, एहेन एक जीवन्त-जागन्त मातृभाषाक रूपमे मैथिलीक सरजमीन पर की स्थिति अछि? 'अपने बनय चाहैत छथि पुरोहित, अपने यजमान/ई सभ मैथिलीकेँ बनौने छथि अपन गुलाम/बान्हि देने छथिन कसिक' मानकीकरण नामक रस्सीसँ/आ भाषा-बोली विवादमे ओझराक'/एकर अस्तित्व तककेँ करय चाहि रहल छथि समाप्त।' के थिका ई लोकनि? ब्राह्मण लोकनि थिका। तखन फेर जकर भाषा मैथिली अस्सलमे छिऐ से सभ कतय गेला? एक दिल के टुकड़े हजार हुए, क्यो अंगिका बनल, क्यो वज्जिका। मुदा, एहनो लोकक संख्या कम नहि रहलैक जे मैथिलीकेँ धयने रहला, अपन मन-प्राणमे धारण कयने। एहना स्थितिमे, अइ प्रकारक कविगणक मैथिलीमे कविता लिखब की थिक! परार्थी एहि लोकक अनुभव बयान करै छथि— 'हमरा तँ मैथिली लिखबा काल होइत रहैत अछि/एगो स्वतंत्रता-सेनानी जकाँ अनुभूति/बढ़ैत रहैत अछि— 'मातृभाषाक स्वतंत्रता संघर्ष लेल साहस।'

कहब आवश्यक नहि जे गनल-गुथल लोक मैथिली साहित्यमे हेबनिमे लिखा-पढ़ी शुरू केलनि अछि जिनकामे ई सामाजिक चेतना भरल-पुरल अछि आ हिनका लोकनिक लेल साहित्य लिखब मुक्तिक चेष्टा लेल डेग उठायब थिक। नवीनतम नाम रामकृष्ण परार्थीक छनि। अइ कविता-संग्रहकेँ उनटबैत अहाँ पहिले कवितामे देखबै जे ओ धर्मक उन्मादसँ प्रदूषिक देशक उद्धार लेल कबीरकेँ अपनेबाक अनुरोध करैत छथि। एक एहेन युवाकेँ तैयार करबामे, जिनकामे सामाजिक चेतना भरल-पुरल होनि, अनेक पीढ़ीक योगदान रहैत छैक। पहिने क्यो माँगनि खबास होइ छथिन तखने जाक' कोनो रघुनाथ मुखियाक जन्म भ' पबैत छथि। परार्थी अपन पिता पर कविता लिखैत ई पाँती लिखैत छथि— 'ईश्वर मात्र एकहि टा छथिन सर्वशक्तिशाली, सर्वव्याप्त/हुनकर नहि छनि कोनो रूप, आकार/ओ कण-कणमे करैत छथिन निवास/वैह चलबै छथि सगर जहान/भाला-गड़ाँसा, तीर-धनुष आ तरुआरि लेने/हवा फूइस अछि सभ कल्पित भगवानक/समझबैत रहैत छला हमरा/बौआ हौ, सभ जीवमे होइत छैक परमात्माक वास/जानि-बुझिक' नहि करिहह कहियो कोनो जीव पर आघात/अहिंसा परमो धर्म छै बौआ/ई गप सदति रखिहह यादि।'

अहाँ कहि सकै छी जे अहिंसा परमो धर्मः सन के कथन तँ सेहो संस्कृतेमे छै आ संस्कृत ब्राह्मणक धरोहर छी। मुदा, कोना ई बात हाथीक

देखावटी दाँत मात्र छी, से बुझबाक लेल परार्थीक कविता 'धर्मक नाम पर' पढ़बाक चाही। ब्राह्मणवादी सभ्यताकेँ ओ माहुरक गाछ कहैत कनियो नहि थकमकाइत छथि। साफ-साफ कहै छथि– 'विध्वंसक फूल आ फसादक फलबला ई गाछ/सुड्डाह करय चाहैत अछि वर्तमान सभ्यता/एकरा कनिको नहि पसिन्न छैक मनुक्खता/एहि गाछक नजदीक अयला मात्रसँ/लोक बनि जाइत अछि बताह/फेर ओकरा नहि रहैत छैक/गाम-समाज आ देश-दुनियाँक परवाहि।'

कहब जरूरी नहि जे अपन जन्मकालसँ ल' क' एकैसम सदीक अइ वर्ष धरि ब्राह्मणधर्म जतबा आविष्कार वा विकास क' सकल अछि तकर सारांश यैह थिक, जकरा परार्थीक कविता 'माहुरक गाछ'मे देखल जा सकैत अछि। एहेन ठाम जँ अहाँ 'मुण्डा तार' कविता पढ़ू तँ एही धर्मकथाक एक रूपक रचल जायब सन लगैत छैक। ई स्वर मानू तँ परार्थीक रचनाधर्मक केन्द्रीय स्वर जकाँ छनि जे मुक्ति लेल अड़ब आ लड़ब अपरिहार्य छैक– 'मिथिलामे पुनर्जागरण लाबै लेल लड़हि पड़तौ मीत/एतय बहुत लोक एखनो छौक रखने भावना ऊँच-नीच/समतामूलक समाज लेल लड़हि पड़तौ मीत।' तेँ जखन परार्थी कविता लिखैत छथि जे 'हमरा नहि चाही हिन्दू राष्ट्र', तँ एकर इतिहासमे जाइत अपन पुरखाक भोगल यातनाकेँ स्मरण करैत बाबा साहेबक स्मरण धरि पहुँचि जाइत छथि। मुश्किल ई छैक जे आइ दलित आ पचपनियाँकेँ सेहो हिन्दूए राष्ट्र चाही, कारण माहुरक गाछ तरमे रहैत बुद्धिहरण भ' चुकलनि अछि। परार्थी ओइ यातना भरल गुलामीक स्मृतिमे जाइत छथि आ कहै छथि– 'हमसभ वेद, धर्मग्रन्थ, मनुशास्त्रसँ शासित भ'/फेरसँ नहि बनय चाहैत छी गुलाम/ हमरा सभकेँ नीक लगैत अछि/स्वतंत्रता, समानता आ न्यायसँ भरल/बाबा भीमक संविधान।'

मोन पड़ैत अछि, संविधान लागू भेलाक बाद भ्वाइस ऑफ अमेरिकाक एक इन्टरव्यूमे बाबासाहेब भारतक लोकतांत्रिक-निष्ठा पर सन्देह व्यक्त करैत बाजल छला जे राजनीतिक लोकतंत्र तँ अइ संविधान द्वारा जरूर लागू भ' गेल अछि मुदा जाधरि सामाजिक लोकतंत्र नहि स्थापित होइत अछि, ई अधूरा रहत, एकरा क्षत-विक्षत हेबाक सम्भावना सदा बनल रहत। सामाजिक लोकतंत्रक लक्ष्यसँ हमरा लोकनि कते दूर छलहुँ आ आइ तँ आरो कते दूर भ' गेल छी से नाँगट आँखियेँ चारू दिस देखि सकैत छी आ ठीक सैह चीज अइ कविता-संग्रहमे सेहो पाबि सकै छी। कहि सकै छी जे ई कविता सभ

आजुक समयक श्वेत-पत्र छी।

सम्भ्रान्त साहित्यक सोच-समझ, मनोनिर्मिति आ भाषा-व्यवहारसँ ई दलित कविता सभ कतेक अलग अछि, सहजहि अइठाम देखल जा सकैत अछि। जेना गहन समाधिमे उतरने बिना क्यो परमात्माक अस्तित्व नहि महसूस क' सकैत अछि, ठीक तहिना गहन दलित-भोग भोगने वा ताही कोटिक सह-अनुभूति अर्जित कयने बिना एहि कविता सभक मर्ममे पैसब असम्भव अछि। दुर्भाग्यक बात थिक जे मैथिलीमे एहेन कोनो निकष नहि बनि सकल। परम्परित मैथिली कविताक अध्ययन एखनो पंडिजी लोकनि, मने ब्राह्मणवादी विद्वान् लोकनि रसशास्त्रेक आधार पर करैत छथि। मुदा एतय, परार्थीक कवितामे कोन रस पायब? वीभत्स रस, जे अहाँक धार्मिक भावनाकेँ आहत क' सकैत अछि? यात्रीजीक विक्षोभ रस टा ल' क' बूझल जा सकैत अछि, जँ रसशास्त्रेक आधार पर कविताकेँ परखबाक जिद हो तँ। एकरा पाछू कारण छै। क्यो कवि कविता किए लिखैत अछि? आनन्दक अनुभूतिकेँ व्यक्त करबाक लेल। अपनाकेँ एकात राखि दुनियाँक विडम्बना देखेबाक लेल। जकरासँ असहमत अछि तकर खिल्ली उड़ेबाक लेल। माफ करब, दलित कविता-लेखनक कारण अइ सभमेसँ किछुओ नहि थिक। रामकृष्ण परार्थीयेक अनुभवकेँ जँ देखी तँ बहुत बात स्पष्ट भ' सकैत अछि। कविता पर लिखल अपन एक कवितामे ओ कविता लिखबाक कारण बतबैत कहैत छथि— 'जनमैते बान्हि देल गेल हमरा/नीच जाति कहि धार्मिक आ सामाजिक रस्सीसँ/ओहि रस्सीकेँ खोलै लेल/हम करैत रहैत छी सदिखन संघर्ष/खोजैत रहैत छी अपना मुक्ति लेल/नव-नव रस्ता/लिखैत रहैत छी अपमान अनादरसँ भोगल दुख-व्यथा/तखन अनायासे बनि जाइत अछि एगो कविता।'

स्वाभाविक बात छै जे सम्भ्रान्त साहित्यक जे सौन्दर्य-बोध हेतै, शिल्प-दृष्टि हेतै, दलित साहित्यक ताहिसँ सर्वथा भिन्न हेतै। किछु दशक पहिने धरि के सोचि सकै छल पवित्र माँ मैथिलीमे एहू तरहक कविता लिखल जेतै! किए? पहिने अइ लोककेँ मनुक्खे नहि बुझल जाइत रहै, कवि बूझब तँ बहुत आगूक बात भेलै। जखन कि देखियौ, मैथिली हिनको सभक भाषा छियनि। आ, सच तँ ई अछि जे हिनके लोकनिक पुरखा मैथिलीमे कविता लिखबाक आविष्कार कयने रहथि। दलित कविता सम्भ्रान्त कवितासँ कतेक अलग होइत छैक, परार्थी कहै छथि— 'लोक कहैत अछि बनि जाउ

चाटुकार/मिलैत रहत पुरस्कार आ सम्मान/मुदा स्वाभिमान बेचिक'/हम नहि कमाय चाहैत छी नाम/आ ने हम अपन कविताकेँ/बनबय चाहैत छी गुलाम।' हुनका एहि बातक कोनो अपेक्षा नहि छनि जे अहाँ हुनका कवि बुझियनु। मुक्ति हुनकर प्रधान जीवन-मूल्य छियनि।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ कतहु लिखने छथि, अइ देशक हजारो वर्षक इतिहासमे जे क्यो विवेकी महापुरुष आइ धरि भेला, वर्णव्यवस्था अवश्य हुनका घृणास्पद लगलनि अछि आ ओ एकर विरोध जरूर कयने छथि। मुदा, तखन आइयो ई व्यवस्था कोना जिबै अछि? धर्मक बल पर। एकरा धर्म, ईश्वर, वेद, शास्त्र आदिक कवच पहिरा देल गेलै। तहर-तरहक मिथक, पुराकथा, किंवदन्ती शास्त्र-पुराणक नाम पर, धार्मिक भय देखाक' चला देल गेलै। एहनामे स्वाभाविक अछि जे कोनो दलित कवि जखन कलम उठाओत, ओकर टक्कर धर्म, मिथक, पुराकथा आदि संग होयब अनिवार्य छैक। तेँ एहू संग्रहमे अहाँ देखबै, मनु, द्रोण, शम्बूक, एकलव्य, अहिल्या, वृन्दा आदिक प्रसंग रूप-रूपक बानामे अनेक ठाम प्रकट भेल छैक। एहना ठाम अनीतिपूर्वक बहुजन समुदायकेँ मटियामेट करबाक ब्राह्मणधर्मक अत्याचारकेँ बेखौफ नाँगट कयल गेल छैक। अपन एक कवितामे तँ ओ एहेन तथाकथित जनवादी सभक सेहो खबरि लेलनि अछि जे बाहर-बाहर वामपंथी आ अन्दर-अन्दर ब्राह्मणवादी भेल करैत छथि। मुदा, कविक दुख तखन आत्यन्तिक रूपसँ बढ़ि जाइत छैक जखन ओ दलित-समाजमे चेतनाक घोर अभाव देखै छथि आ दोसर दिस स्वयं साधनसम्पन्न दलिते लोकनिकेँ अपन वर्गसँ निरपेक्ष बनल दलित-ब्राह्मण बनबाक कोशिश लेल व्याकुल देखैत छथि।

रामकृष्ण परार्थी नवागन्तुक कवि छथि। एखन ओ अपन कवितामे अधिकतर अभिधामे बात करैत छथि। अधिकतर अपन विक्षोभ, विरोध आ विद्रोहकेँ यथावत कवितामे पेश क' देल करैत छथि। समानता, स्वतंत्रता, भाइचारा, सर्वधर्मसमभाव, लोकतंत्र, संविधान, वैज्ञानिक चेतना— ई सभ सन्दर्भ शब्दशः हुनकर कविता सभमे बेर-बेर अबैत अछि। हुनकर कविताक सौन्दर्य एकर कथ्यमे छैक आ ओहि कथन-भंगिमामे, जकरा सुनबाक लेल मैथिलीक कान हजार बरससँ पियासल रहल अछि। प्रचलित मानदण्डक आधार पर अइ कविता सभक मूल्यांकन कठिन अछि। तेँ, ई संग्रह एहू

बातक आवश्यकता पर बल दैत अछि जे दलित सौन्दर्यशास्त्र पर मैथिलीमे काज करबाक समय आब आबि गेल छैक।

अइ संग्रहक प्रकाशन पर हम परार्थीकेँ बहुत-बहुत बधाइ दैत छियनि।

—तारानन्द वियोगी

आभार निवेदन

हमर दोसर मैथिली काव्य-संग्रह 'प्रतिकार एखन बाँकी अछि' अपने सभक सोझाँ अछि। हमर पहिल मैथिली काव्य-संग्रह 'दू पटरीक बीच' 2020मे प्रकाशित भेल रहय, से पढ़ि अपने सभ हमर उत्साहवर्द्धन कएने रही। उमेद अछि जे एहि संग्रहक सभ कविता सेहो अपनेकेँ नीक लागत। एहि संग्रहक कविता सभमे स्वानुभूतिमे गुँथल दलित-बहुजन समाजक पीड़ा आ आक्रोश अनायास शब्द रूपेँ अंकित भेल अछि। भारतक आन इलाका जकाँ मिथिलाक दलित समाज सेहो हजार-हजार बरिससँ वर्ण आ जातिसँ उपजल संत्रासकेँ भोगि रहल अछि। ई स्थिति तखन अछि जखन समताक उद्घोष कर'बला बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर रचित संविधानकेँ लागू भेला बहत्तरि बरिस भ' रहल अछि। हुनकर देखल छुआछूत आ भेदभाव-मुक्त भारतक सपना एखनो अपूर्ण अछि।

कविताक मादे जे बहुजन चेतनाक स्वर मुखरित भेल अछि, तकर मूल स्त्रोत हम अपना पिताजी यशकायी पशुपति पासवानकेँ मानैत छियनि। पिताजी कबीरपंथी रहथि आ अन्यायक प्रतिकार हुनकर स्वभाव रहलनि। ओ सभ बातकेँ तर्कक कसौटी पर कसबाक कोशिश करैत रहलाह। हालाँकि हुनकर एहि तर्कक कसौटी पर कसबाक क्षमता आ कोशिशक अपन सीमा रहलनि। मुदा हुनका अपन क्षमता पर भरोस रहनि। ओ कबीरकेँ उद्धृत करैत बरोबरि कहथि, 'तू कहता कागत का लेखी, मैं कहता आँखन देखी।' पोथीमे किछु अंशमे जे बहुजन वैचारिकी आओल अछि तकरा लेल हम बहुजन वैचारिकीक जनक जोतिबा फुले आ सावित्री फुलेकेँ हृदयतलसँ स्मरण करैत नमन करैत छी।

एहि पोथीकेँ आकार लेबाक क्रममे हमरा किछु विद्वतजनक विशेष सहयोग भेटैत रहल जिनका प्रति आभार व्यक्त करब हमर कर्त्तव्य भ' जाइत अछि। हम मैथिली साहित्यक धारा आ स्थापित परम्परासँ फराक किछु नव लिखबाक साहस जुटा सकलहुँ तँ एकर पहिल श्रेय हमर साहित्यिक मित्र श्री रामनरेश यादवजी (शिक्षक, फुलपरास)केँ जाइत छनि।

हिनकर प्रोत्साहन आ सहयोग एहि काव्य-संग्रहक रचना-क्रममे शुरूसँ अन्त धरि हमर आत्मबल बढ़बैत रहल, एहि काव्य-संग्रहक बहुलांश कविता हिनक व्हाट्सएप्प पर पठाक' हिनकासँ पढ़बा-गुनबा लैत छलहुँ, तखने हम आत्मसन्तुष्ट भ' पबैत छलहुँ। ओ एहि काजक लेल अपन बेशकीमती समय निकालि हमरा बहुमूल्य सलाह आ सुझाव दैत रहलाह। तहिना वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय तारानन्द वियोगी सर सेहो एहि रचनाक क्रममे अपन आशीर्वादसँ हमरा सदति सम्बल प्रदान करैत रहलाह। आभार ज्ञापन लिखबा काल यदि हम अन्तिका प्रकाशनक सम्पादक श्री गौरीनाथ सर आ श्रीधरम सरकेँ बिसरि जाइ तँ बुझू जे ई हमर बइमानी होएत। एहि दुनू विद्वतजनक हमरा प्रति बहुत स्नेह-सहानुभूति आ सहयोग रहलनि अछि। ई दुनू गोटे समय-समय पर फोन क' हमर आत्मविश्वासकेँ बढ़बैत रहलाह, जाहिसँ हमरा मोन-मस्तिष्कमे एगो नव ऊर्जा आ उत्साहक संचार होइत रहल। एहि परिपेक्ष्यमे हम पाठक लोकनिक समक्ष श्रीधरम सरक उत्साहवर्धक टिप्पणी राखय चाहैत छी जे ओ हमर फेसबुक वॉल पर कोनो एकटा कविता पढ़ि कएने रहथि 'भाइ, अहाँक कविता मैथिलीमे नव परम्पराक शुरूआत क' रहल अछि, लिखैत रहू। बिना कोनो चिन्ता कएने। जे भविष्य बनाबैत छैक तकरा वर्तमानमे बहुत किछु सुनय पड़ैत छैक, ई जे पुरस्कार लेल अकादमी आ संस्था सभक आगाँ-पाछाँ बुलबुला देखैत छी से क्षणजीवी छैक, बधाइ।'

कवि-कथाकार आचार्य रामानन्द मण्डल (सीतामढ़ी), वरिष्ठ साहित्यकार रामश्रेष्ठ दिवाना (राष्ट्रीय अध्यक्ष, बहुजन लेखक संघ, जिरौल, बेनीपट्टी), प्रो. विजय प्रकाश सर (विसनुपर चौक, अरेड़), कवि मित्र रघुनाथ मुखियाजी (सुपौल), अनुज वैद्यनाथी राम (भगवतीपुर, अन्धराठाढ़ी), मित्र अजय पासवान (रसीदपुर, खजौली), मित्र कामोद साफी (परसौनी, बिस्फी), राज नारायण राजू (बनौर, झंझारपुर) आ डॉ. विजय शंकर पासवान (ककना, मधुबनी) सहित ओहि सभ मित्र आ बन्धु-बान्धवक प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करैत छियनि जे एहि रचनाकेँ पठनीय बनबयमे प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूपसँ हमरा सहयोग आ सुझाव प्रदान कएलाह। अन्तमे हम नवारम्भ प्रकाशनक कर्ता-धर्ता वरिष्ठ कवि आदरणीय अजित आजाद सरकेँ सेहो धन्यवाद कहबनि जे एहि पोथीकेँ सुरुचिपूर्ण व मनमोहक कलेवरमे

प्रकाशित कएलाह। हँ, यदि हम पोथीक आवरण बनेनिहार मिथिला पेन्टिंगक सिद्धहस्त कलाकार प्रसून कुमार (राँटी, मधुबनी)केँ बिसरि जएबनि तँ ई अन्याय होयत। हुनकर बनाओल आवरण पेन्टिंग हमर कविता सभमे आओल शाब्दिक प्रतिकारकेँ मजगुत करबामे सहायक भेल अछि।

—रामकृष्ण परार्थी

•

प्रतिकार एखन बाँकी अछि : 16

कविता-क्रम

19 : सन्देश
20 : बाबूजीक चरणमे यथाशक्ति शब्द-सुमन
23 : मैथिलीक पीड़ा
26 : प्रतिकार
28 : षड्यंत्र
30 : धर्मक नाम पर
32 : माहुरक गाछ
34 : मुण्डा तार
36 : मनुक्ख जाति छी हम
37 : लड़हि पड़तहु मीत
38 : हमरा नहि चाही हिन्दू राष्ट्र
40 : जीबैत अछि द्रोण
42 : परार्थी छी हम
43 : कविता संग अनुबन्ध
45 : मैथिली साहित्य आ मिथिलाक दलित
46 : क्षमा करब हे बाबा भीम
47 : प्रतिकार एखन बाँकी अछि
49 : कूपमण्डूक
51 : दलित विमर्शक कविता
53 : सूर्यक आस
55 : अन्धविश्वासक गाछ
57 : हम नहि छी एकवचन
60 : एकलव्य छी हम
61 : कठघरामे धर्मशास्त्र
63 : ईश्वर अबस्स भेटत
64 : आगि
66 : दलितक टोल
68 : बौकनाथ बलगोबिना

69 : जातिक विनाश
72 : लड़ैत रहब विचारधाराक लड़ाइ
74 : हम गलत नहि छी भाइ
75 : हम ठीक छी जीबैत इन्सान
77 : अन्योन्याश्रय सम्बन्ध
78 : मृत्युक डर
80 : हँ, हम अम्बेडकरवादी छी
82 : धिक्कार अछि, धिक्कार
83 : नहि चाही युद्ध
84 : दलितोमे अछि जातिवाद
86 : रहय दिअ मनुक्ख
88 : सनकी छी हम
89 : नहि डरब
90 : हौ भाइ बौधू आबहु जागह
92 : सुनू यौ वरिष्ठ साहित्यकार
93 : गम्भीर प्रश्न
94 : बाबा दण्डोत बच्चा जाय सियाराम
96 : राम नहि छथि हमर आदर्श
98 : हारि जाइत छी बेर-बेर
100 : की ईश्वर अछि
103 : पीपरक गाछ
105 : विरोध तँ हमर होत
106 : हम लिखब मानवीय संवेदना
108 : बौआ तरि जइबेँ
109 : देश बदलि रहल छैक
111 : कविता प्रार्थना नहि थिक

सन्देश

महकि रहल अछि बारुदक गन्धसँ ई परिवेश
बुद्ध बनि शान्ति-अहिंसाक उपदेश देल जाओ
धर्मक उन्मादसँ प्रदूषित भ' गेल अछि अपन देश
कबीर बनि सद्भाव-सौहार्द्रक सन्देश देल जाओ।

•

बाबूजीक चरणमे यथाशक्ति शब्द-सुमन

निर्गुण ब्रह्मक उपासक रहथि हमर बाबूजी
हुनका बातमे, विचारमे
व्यवहारमे, संस्कारमे
भरल रहनि कबीरक विचार
एगो तुलसीक माला पहिरने
जिनगी भरि निमाहैत रहला शाकाहार
हम नहि देखने रहियैक हुनका कहिओ
ब्राह्मणक धर्मग्रन्थ पर करैत मिसिओ भरि विश्वास
पाखण्ड-आडम्बरसँ बड़ी दूर रहनि हुनकर संसार
हँ, प्रतिकुल सामाजिक परिस्थितिक कारणेँ
ओ नहि क' सकलाह किछु कर्मकाण्ड छोड़बाक साहस
जाति-समाजक दबावमे
हुनका करय पड़लनि अपना माय-बापक श्राद्ध
नहि तँ हुनकर आन्तरिक इच्छा रहनि
जे पचीस-पचास मुरतेक भण्डारा क'
भ' जाइ बेड़ा पार
मुदा हुनका जीबैत हम अपना घर-परिवारमे
नहि देखलियैक कहिओ ब्राह्मणक विधि-विधानसँ
होइत पूजा-पाठ

गृहस्थ आश्रममे रहितहु ओ रहथि
उच्च कोटिक सन्त
धर्म आ ईश्वरक मामिलामे स्पष्ट रहनि हुनकर दृष्टिकोण
ईश्वर मात्र एकहिटा छथिन सर्वशक्तिशाली, सर्वव्याप्त
हुनकर नहि छनि कोनो रूप, आकार
ओ कण-कणमे करैत छथिन निवास

वैह चलबै छथिन सगर जहान
भाला-गड़ाँसा, तीर-धनुष आ तरुआरि लेने
हवा फूसि अछि, सभ कथा कल्पित भगवानक
समझबैत रहैत छलाह हमरा—
बौआ हौ, सभ जीवमे होइत छैक
परमात्माक वास
जानि-बुझिक' नहि करियह कोनो जीव पर आघात
अहिंसा परमो धर्म छैक बौआ
ई गप सदति रखियह यादि

साक्षर नहि रहितहु अकाट्य छलनि हुनकर तर्क
हुनका नहि पसिन रहनि जाति-पाति आ
धर्म-समाजमे कोनो एक जातिक वर्चस्व
ओ गप-सपमे अक्सरहेँ कहैत रहैत छलाह हमरासँ—
हौ, जन्मसँ नहि कियो होइत छैक छोट आ बड़
पढ़बह-लिखबह, नीक कर्म करबह तँ
तोरो सम्मान देतह सभ
ओ सभ मनुक्खकेँ बुझैत छलाह एक समान
हुनका नजरिमे नहि रहैत छलनि
ई हिन्दू आकि ओ मुसलमान
धार्मिक कट्टरता आ साम्प्रदायिक उन्मादसँ दूर
चलैत रहला जीवन पर्यंत
मानैत रहला मानवताक सिद्धान्त

सच्च पूछी तँ हमर पहिल गुरु रहथि हमर बाबूजी
वैह भरलाह हमरामे मानवतावादी संस्कार
वैह सिखओला हमरा सादा जीवन, उच्च विचार
आ आइ हम हुनके प्रेरणासँ क' रहल छी
फूइसक परदाफाश
लिखि रहल छी समता-भाइचाराक बात

उठा रहल छी दलित-दमित, शोषित-वंचितक
हक-अधिकारक आवाज
आ ई सभ लिखलासँ हमर मोन रहैत अछि प्रसन्न
जेना बुझना जाइत अछि
हम अपना बाबूजीक चरणमे
यथाशक्ति क' रहल छियैक
शब्द-सुमनक समर्पण...।

•

मैथिलीक पीड़ा

हमर कतेको मित्र छथि हमरासँ नराज
हुनका सभकेँ बुझना जाइत छनि जे हम
मैथिली लिखिक' अप्रत्यक्ष रूपसँ
बढ़ावा द' रहल छियैक ब्राह्मणवादकेँ
जखनकि हम हुनका सभकेँ कहैत रहैत छियैक बेर-बेर—
भाइ, मैथिली हमरो-अहाँक भाषा छी
एहि पर हमरो-अहाँक अधिकार अछि
मैथिली मात्र ब्राह्मणेक नहि, मिथिला क्षेत्रमे रहनिहार
हरेक जाति, हरेक सम्प्रदाय आ हरेक धर्मक लोकक
पहिल बकार अछि
मुदा ओ सभ ब्राह्मणवादक अन्ध विरोधमे
नहि मानैत अछि हमर गप्प
उनटे हमरे समझाबय लगैत अछि गलत
मैथिली मात्र बाभन टाक भाषा छैक
आ अपना सभक भाषाकेँ ठेंठ कहल जाइत छैक
तखन हम पूछि दैत छियैक
ठेंठ कथीक, कोन भाषा
हिन्दीक, भोजपुरीक आकि मैथिलीक
फेर हुनकर सभक मुँह भ' जाइत छनि बन्न
मुदा तइयो ओ सभ भितरका मोनसँ
मैथिलीकेँ नहि करैत छथि पसिन
आ फेर हम सोचय लगैत छी एकान्तमे
किएक छैक गैर ब्राह्मण वर्गकेँ
अपन मायक भाषाक प्रति एहेन घृणित विचार
किएक संकुचित भेल जा रहल छैक दिनो-दिन
मैथिली भाषाक क्षेत्र-विस्तार

ब्राह्मणेत्तर वर्ग किएक करैत अछि
मैथिलीक बहिष्कार
तखन हमरा मिलैत अछि मात्र एक जवाब—
मैथिली भाषाक आन्दोलनकर्ता सभ
मैथिली भाषाक नाम पर बनल संस्था सभ
आ मंच-माला-पागक लोभी बुद्धजीवी
साहित्यकार, पत्रकार लोकनि छथि
एहि समस्याक लेल जिम्मेवार
ई सभ देखैत अछि अपन जाति
अपन परिवार, अपन समांग
अपन संस्थामे, समितिमे नहि देबय चाहैत छथिन
ब्राह्मणेत्तर वर्गकेँ कोनो स्थान
अपने बनय चाहैत छथि पुरोहित आ अपने यजमान
बस देखबैत छथि जे हम छी बहुत बड़का मैथिलीसेवी
जखन कि यथार्थमे ई सभ
मैथिलीकेँ बनौने छथि अपन गुलाम
बान्हि देने छथिन कसिक' मानकीकरण नामक रस्सीसँ
आ भाषा-बोली विवादमे ओझराक'
एकर अस्तित्व तककेँ करय चाहि रहल छथि समाप्त
मैथिली छटपटा रहल छथि
अपन स्वतंत्रता लेल
मैथिली कछमछा रहल छथि
अपन अस्मिताक रक्षा लेल
आ ई सभ मैथिलीक दुख-दर्दकेँ जानिओक'
बनल छथि अन्जान
मुदा हमरा अपन मायक भाषाक पीड़ाकेँ
नीकसँ अछि भान
आ संगहि ओहि मित्र लोकनिकेँ सेहो
आकृष्ट कराबय चाहैत छियैक धिआन
जिनका सभकेँ बुझना जाइत छनि जे

मैथिली लिखलासँ बढ़ैत छैक ब्राह्मणवाद

भाइ, अहाँ छी संकीर्ण मानसिकताक शिकार
हमरा तँ मैथिली लिखबा काल होइत रहैत अछि
एगो स्वतंत्रता सेनानी जकाँ अनुभूति
बढ़ैत रहैत अछि—
मातृभाषाक स्वतंत्रता संघर्ष लेल साहस
जगैत रहैत अछि मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रति अनुराग
यैह अछि हमरा मैथिली पढ़बाक-लिखबाक सार...।

•

प्रतिकार

यादि अछि
पाँच-छह बर्खक रही तँ पहिल बेर
करौने रहय एगो बुढ़बा
हमरा जाति-पातिक भान
'हटले रह दुसाधसँ हड्डी छुआइत छैक'
डाँटिक' कहि
हमरा बालमनकेँ कयने रहय अपमान
आ हम आहत भ' कनैत जाक'
बाबू जीसँ पुछने रहिएक–
अँय यौ बाबू, अपना सभ दुसाध छियै
अपना सभसँ हड्डी छुआइत छै

किनसाइत बाबूजी कतेको बेर घबाह भ'
चुकल छलाह एहि शब्दक विषवाणसँ
किनसाइत कतेको बेर टूटल छलनि हुनकर आत्मस्वाभिमान
एहि शब्दरूपी पाषाणसँ
मुदा ओ सभ रहनि हुनकर स्वयं पर आघात
परन्च, अपन पुत्र पर भेल आघातकेँ
एगो पिता कोना क' सकैत छला बर्दाश्त
आक्रोशसँ हुनकर देह-हाथ थड़थड़ाय लागल रहनि
आँखि लाल टुहटुह देखाय लागल रहलि
जेना धमनीक सभ शोणित चलि आयल रहनि आँखिमे

मुदा सामाजिक-धार्मिक रस्सीसँ कसिक' बान्हल
एगो विवश पिता कइए की सकैत छला
सांत्वना, संवेदना, सहानुभूतिक अतिरिक्त हुनका लग

आर की रहनि जे हमरा द' सकैत छला
'बाउ हौ कोइ फूइस कहैत छह
जे मनुक्खसँ मनुक्ख छुआइत छैक
ईश्वर बनौने छथिन पाँच तत्वक सभक शरीर
जकरा ई ज्ञान नहि छैक
वैह भेद-भाव बतियाइत छै'

बाबू जीकेँ समझौला पर हम बिसरि सकैत छलहुँ
बालपनक अपमान
मुदा बेर-बेर अपमानसँ टूटि जाइत अछि
सहनशक्तिक सभ सीमान
दुसाध-मुसहर भ' कुर्सी पर बैसि गेलै
डोम-चमार भ' चापाकल पर चढ़ि गेलै
तोँ अछूत छेँ, तोरा लेल मन्दिरमे प्रवेश वर्जित छौक
तोँ अन्त्यज्य छेँ, चल उठ, भोज-भातमे
अलग तोहर पंक्ति छौक
अक्सरहेँ सहय पड़ल अछि हमरा जातिय दंश
एहि घृणित जाति-पाति आ वर्ण-व्यवस्थासँ
एखनहुँ तक होइते रहैत छी तंग

तखन आब अहीं कहू
की हम अपन पिताजी जकाँ विवश भ'
चुपचाप देखैत रही
अपन बेटा-पोताक संग होइत अपमान आ तिरस्कार
आकि एहि घृणित संस्कृतिकेँ
कियैक नहि करी कसगर प्रतिकार?

•

षड्यंत्र

हँ, हमरा डर अछि
डर अछि हमरा
अहाँ बन्न क' देब हमर
इनकिलाबक आवाज
आ विध्वंस क' देब हमर सभ आन्दोलन
षड्यंत्रक जाल बिछाक'
अपना आदमीकेँ पठाक'
अपन वाक्पटुता शैलीसँ
दबा देब हमर सचुका बात

मुदा सुनि लिअ
हमहुँ चुप नहि रहब
फेर लिखब
सभक हाथमे जरैत मशालक कल्पना क'
किसान-मजूरक डेगसँ-डेग मिलाक'
चलैत छविकेँ अपन स्मृतिमे बैठाक'
एगो क्रान्तिक गीत
एगो इनकिलाबक कविता
आ अहाँ फेर वैह करब
जे आइ धरि करैत अयलहुँ अछि
अपन कुर्सी बचाबय लेल
अपना सत्ता षड्यंत्रमे लोककेँ फँसाबय लेल
एगो अन्तहीन बकबाद
राष्ट्रीयता, देशप्रेम सन भावनात्मक बात
कियैक तँ एकर सिवा
अहाँक कार्ययोजनामे नहि अछि

रोजी-रोजगार आकि आर्थिक विकास
अछि त' बस सत्ताक भूख
आ कुर्सीक स्वार्थ

मुँहमे राम बगलमे छूरी रखनहुँ
अहाँ अपन फूसिऔका मिठगर बोलीसँ
बनि जायब बेदाग
आ बदनाम क' देब हमरा
जे हमहीं मचौने रही उत्पात

मुदा एगो बात फेरसँ सुनि लिअ
हमहुँ नहि मानब हारि
अहाँक यातनासँ
अहाँक प्रताड़नासँ
अहाँक सत्ताक अहंकारसँ
अहाँक कुत्सित विचारसँ
हम सदति लिखैत रहब
जे सत्त छैक से बात...।

•

धर्मक नाम पर

धर्मक नाम पर
भेल रहनि महा सती वृन्दा संग बलात्कार
धर्मक नाम पर
वामन ठकने रहथिन राजा बलिसँ राज-पाट
धर्मक नाम पर
इन्द्र छलसँ माँगि लेने रहथिन कर्णक कवच-कुण्डल
धर्मक नाम पर
श्रीकृष्ण कएलखिन भरि महाभारतमे छल-कपट
धर्मक नाम पर
हरणे रहथिन राम निर्दोष शम्बूकक प्राण
धर्मक नाम पर
गोडसे लेने रहैक राष्ट्रपिता गाँधीक जान
धर्मक नाम पर
होइत रहलैक अदौ कालसँ आइ धरि दलित संगे
शोषण-अत्याचार
धर्मक नाम पर
ओ सहैत आबि रहल अछि अपमान आ तिरस्कार
धर्मक नाम पर
चलैत छैक पाखण्ड-आडम्बरक दोकान
धर्मक अढ़मे जन्मैत छैक
राम-रहीम, आसाराम
धर्मक नाम पर
जरल रहैक गोधरा-गुजरात
धर्मक नाम पर
होइत रहलैक दिल्ली, भागलपुर आ
आर कतेको शहरमे फसाद

धर्मक नाम पर
जग भरिमे पसरल छैक आतंकवाद
धर्मक नाम पर
अफगानिस्तानमे जारी छैक नरसंहार
धर्मक नाम पर
अपनो देशक भेल रहैक दू खण्ड
धर्मक नाम पर
आइयो बहैत छैक उन्मादक बसात
धर्मक नाम पर
खूब चलि रहल अछि भगवा-हिजाब विवाद
सच्च पूछी तँ धर्मक नाम पर
सदति होइत रहलैक मानवताक नोकसान
धर्मक नाम पर
आब कोन कुकृत्य बाँचल अछि श्रीमान्...?

•

माहुरक गाछ

जानि ने के रोपिक' मरि गेल
ई माहुरक गाछ
जे प्रकृति पर्यावरणक कएने जा रहल अछि विषाक्त
चौबीसो घंटा गछारने रहैत अछि
एहि गाछकेँ मोटका-मोटका अजगर साँप
गहुमन-करेत सभ एहि गाछ पर जमौने रहैत अछि
अपन अड्डा
आ छोड़ैत रहैत अछि फुफकार
एहि गाछक फल खाक' नीक-नीक आदमी
बनि जाइत अछि नरपिशाच

किनसाइत एहि गाछक रोपबइया एकरा पटौने छल
घृणा-विद्वेषक पानिसँ
आ जड़िमे देने छल उन्मादक खादि
यैह कारण अछि जे आब ई गाछ
ऑक्सीजनक बदलामे छोड़ैत अछि
कार्बन मोनो-ऑक्साइड

विध्वंसक फूल आ फसादक फलबला ई गाछ
सुड्डाह करय चाहैत अछि वर्तमान सभ्यता
एकरा कनिको नहि पसिन छैक मनुक्खता
एहि गाछक नजदीक अएला मात्रसँ
लोक बनि जाइत अछि बताह
फेर ओकरा नहि रहैत छैक
गाम-समाज आ देश-दुनियाँक परबाहि
ओ एहि गाछ तर बैसि बनबय लगैत अछि

विध्वंसक हथियार
ओ एहि गाछ तर बैसि लगबय लगैत अछि
फसादक जोगाड़

मुदा एकरा मतिभ्रम कही आकि दृष्टि-दोष
एहि माहुरक गाछकेँ मोक्षक द्वार
बुझैत अछि बहुसंख्यक लोक
आ एहि अन्धविश्वासमे माहुरक गाछक रक्षा लेल
मानव बम बनबाक लेल भ' जाइत अछि तैयार
गिरा दैत अछि हजारक-हजार निर्दोषक लहास
जखन कि क्षमा-दया, सत्य-अहिंसाक रास्ते
आसानीसँ पहुँचल जा सकैत अछि ईश्वरक दरबार
प्रेम-सिनेह, शान्ति-सौहार्द्र-सद्भावनासँ खोलि सकैत अछि
अपन मोक्षक द्वार
मुदा ई सभ कियैक मानत हमर गप
जखन कि माहुरक गाछ रोपयबला हिनकर सभक
छनि अपन आदर्श!

•

मुण्डा तार

देखने छियैक हम घटवार पोखरिक
महार परहक आसमान छूबैत तारक गाछ
ओहि तार पर चढ़ैत खन पासीकेँ
भ' जाइत छलैक हालति खराब
उताड़ैत रहैत छल ओ घैला भरि तारी
तारी बेचनेसँ चलि जाइत रहैत छलैक
पासी आ तार गाछक मालिककेँ भरि सीजन
दालि-भात-तरकारी

ओहि तारक गाछक पातसँ लटकल रहैत छलैक
चिड़ै-चुनमुनीक मारिते रास खोंता
खोंता एहेन कि चिड़ैक अद्‌भुत कलाकृतिसँ
उत्कृष्ट कलाकार तक लजा जाइत छल
लाल-पीयर-चितकाबर चिड़ै-चुनमुनी सभ एतेक
सुन्दर आ मनोहर
कि नहि चाहितहुँ एकटक देखा जाइत छल
ओकर सभक कर्णप्रिय कलरव सुनि
चिन्ता-फिकीर बिसरा जाइत छल
अलग बोली, अलग प्रजाति, अलग-अलग रंगक रहितहुँ
ओ सभ मिलि-जुलिक' रहैत छल एक संग
ओहि तार गाछ परहक प्राकृतिक दृश्य देखलासँ
प्रसन्न भ' जाइत छल मोन

मुदा परिवर्तन तँ प्रकृतिक नियम होइत छैक
कालक्रममे बदलाव परिस्थितिक संग होइत छैक
एक दिन बदलि गेलैक ओहि तारक गाछक प्रकृति

जखन खसलै ओहि पर बिजलौका
भ' गेलैक ओ तारक गाछ मुड़ेरा विहीन
उजड़ि गेलैक चिड़ै-चुनमुनीक बसल-बसाओल परिवार
छिना गेलैक पासी आ तार गाछक मालिकक
मुँहक आहार
आ परिस्थितिक फायदा उठाक' ओहि तारक गाछ पर
आधिपत्य जमा लेलक एगो उल्लू महाराज
आब ओ तारक गाछ पर बैसल-बैसल
घुघुआइत रहैत छैक अनेरो
जेना लोकसभसँ कहय चाहैत छैक
अपना भाषामे अपना मोनक बात
इजोत नहि पसिन अछि हमरा
हम स्थापित करय चाहैत छी अन्हारक साम्राज्य!

•

मनुक्ख जाति छी हम

जानि ने कियै धर्मसँ बड़ डराइत छी हम
छी मनुक्ख, हिन्दू कहयमे लजाइत छी हम
स्वर्ग-नर्क, जन्नत-जहन्नुम सभ फूइस कल्पना छैक
पंडित-मौलवीक बात नहि पतियाइत छी हम

धर्मसँ पैघ होइत छैक मनुक्खता
सदिखन यैह बात डिड़िआइत छी हम
हम सभ सन्तान छी एकहि ईश्वरक
हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाइ नहि, भाइ-भाइ छी हम

शोणित लाल अछि हमरो बाभने जकाँ
पुरुष सूक्तक षड्यंत्रमे नहि ओझराइत छी हम
जाति-पाति, धर्म-मजहब सभ वर्चस्वक संस्कृतिक हिस्सा छैक
बाभन-गुआर, दुसाध-चमार नहि, मनुक्ख जाति छी हम।

•

लड़हि पड़तहु मीत

अपन हक-अधिकार लेल लड़हि पड़तहु मीत
मुँहदब्बू बनने नहि टुटतहु ई गुलामीबला रीत
अदौ कालक लिखल कोनो जरूरिए नहि छौक ठीक
नहि कियो जन्मसँ पैघ होइत छैक आ नहि कियो नीच
कुपमण्डूक नहि रह मीता, किछु तर्क-विर्तक सीख
मान्यता-परम्पराक नाम पर भरने छौक कुरीत

डरिक' जिअब मृत्यु छैक मीत, जी-जिनगी निर्भीक
मुर्दा बनि अन्याय सहैत नहि कर जीवन व्यतीत
फलाँ बाबू ठीके कहैत छथि, ई अन्धभक्ति नहि छौक ठीक
अपन बुद्धि-विवेकसँ चुन अधलाह आ नीक
चल संघर्षक रास्ता गबैत नव क्रान्तिक गीत
अपन स्वतंत्र विचार लेल लड़हि पड़तहु मीत

जाति-पाति, धर्म-सम्प्रदाय पर नहि रह तोँ ढीठ
हमरा नजरिमे धर्मसँ पैघ मनुक्खता छौक मीत
क्षमा-दया, सत्य-अहिंसाकेँ बना जीवनक रीत
ब्राह्मणवादक चक्करमे रहि जयबेँ अविकसित
बिनु लड़ने नहि सोचतहु दुश्मन कहिओ हित
शोषक-उत्पीड़क लोकसभसँ लड़हि पड़तहु मीत

अपमान-अनादर सहैत-सहैत आब उबि गेल छौ जी
अपन आत्मसम्मानक रक्षा लेल लड़हि पड़तहु मीत
फूकि दे बिगुल युद्धक, नहि सोच हार आ जीत
मिथिलामे पुनर्जागरण लाबय लेल लड़हि पड़तहु मीत
एतय बहुते लोक एखनो छौक रखने भावना ऊँच-नीच
समतामूलक समाज लेल लड़हि पड़तहु मीत। •

हमरा नहि चाही हिन्दू राष्ट्र

हिन्दू राष्ट्रक परिकल्पना मात्रसँ
सिहरि जाइत अछि हमर आत्मा
डूबि जाइत छी जघन्य इतिहासमे
जाहिमे हमर पुरखा लोकनि सहने रहथि
नारकीय यातना
मनुक्ख रहितहुँ हुनका सभक संगे
कयल गेल रहनि जानवर जकाँ शोषण आ प्रताड़णा

खुटेसि देल गेल रहनि हुनका सभकेँ
धर्मक खुट्टासँ
अन्त्यज कहि वर्णव्यवस्थाक पगहासँ
बान्हि देल गेल रहनि गरदनि
मनु संहितासँ नाथिक' छीनि लेल गेल रहनि
मनुक्ख होयबाक सभ अधिकार
धर्मग्रन्थक गरदनिमे नीच जातिक ढोलना बान्हि
कयल गेल रहनि सामाजिक बहिष्कार

आब जखन एतेक मोश्किल, एतेक संघर्षसँ
भेलहुँहें पुश्तैनी गुलामीसँ थोड़-बहुत आजाद
तँ जातीय अहंकारसँ भरल संकीर्ण मानसिकता
बला लोकसभ
फेरसँ लाबय चाहैत छथि
वैह घृणित संस्कृति, वैह नृशंस सभ्यता
दोहराबय चाहैत छथि फेरसँ वैह जघन्य इतिहास
जाहिमे भरल रहैत छलैक दुनियाँ भरिक भेदभाव
काटल जाइत रहैत छलैक एकलव्यक औंठा

आ चलाओल जाइत छलैक शम्बूकक
गरदनि पर तरुआरि
ई सभ सामाजिक सौहार्द्र आ सद्‌भावनामे
लगबय चाहैत छथि साम्प्रदायिक आगि

जखन कि एहि अगिलेसुआ सभकेँ बुझल छैक
आब नहि हैत कहिओ हमर हिन्दू राष्ट्रक सपना साकार
तइयो बेर-बेर मनुक्खताकेँ लतखुर्दनि करैत
शोषण-उत्पीड़न, अन्याय-अत्याचार पर आधारित
हिन्दू राष्ट्र लेल करैत रहैत छैक असफल प्रयास
जखन कि हमरा बहुजन सभकेँ पसिन अछि
सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न समाजवादी पंथ निरपेक्ष
लोकतंत्रात्मक गणराज्य

हमसभ वेद, धर्मग्रन्थ, मनु संहितासँ शासित भ'
फेरसँ नहि बनय चाहैत छी गुलाम
हमरा सभकेँ नीक लगैत अछि
स्वतंत्रता, सामानता, बन्धुता आ न्यायसँ भरल
बाबा भीमक संविधान!

•

जीबैत अछि द्रोण

हम जखने करैत छी मनुवादक विरोध
हमरा प्रतिरोध करबाक लेल
चलि अबैत छथि मारिते रास द्रोण
आ बरसाबय लगैत अछि हमरा पर
शब्दक विषवाण
लाँघि जाइत छथि सभ साहित्यिक
मर्यादाक सिमान
आ लोकसभ फूइस बजैत छथि
जे बरु मरि गेलाह मनु महाराज
आ गुरु द्रोणाचार्य
अनेरो भ्रममे पड़ल छथि सभ
जे जरि गेलैक मनुस्मृति
आ समाप्त भ' गेलैक छुआछूत
आ ऊँच-नीचक भेदभाव

जखन कि हम हुनका सभकेँ
नित दिन देखैत छियनि एखनहुँ
गाम-समाजमे, हाट-बजारमे
जातिक अहंकारमे
वर्णव्यवस्थाक संकीर्ण विचारमे
मनुस्मृतिक प्रचारमे
साहित्य संसारमे
एकलव्यक औंठा कटबाक जोगाड़मे
छल-प्रपंचक जाल बुनैत
घृणा-विद्वेषक देबाल घिचैत
अपन जातीय वर्चस्व कायम रखबाक लेल

मनुक्खताकेँ लतखुर्दनि करैत
पाखण्ड-आडम्बरक कारबारमे

आ ओ जीबैत रहत ताधरि
जाधरि लोक संविधानसँ नहि
धर्मशास्त्रसँ सिद्ध करैत रहत
अपन न्यायसंगत बात
जाधरि लोक शम्बूकक वधकेँ नहि
मानत अपराध
जाधरि वृन्दा आ अहिल्याक संग भेल छलकेँ
लोक नहि कहत दुराचार
ताधरि जीबैत रहत मनु महाराज
आ गुरु द्रोणाचार्य!

•

परार्थी छी हम

कहिओ काल हम एसगरमे करैत रहैत छी
आत्मचिन्तन
पूछैत रहैत छी अपना मोनसँ अनेक प्रश्न
एतेक निर्भीक आ स्वाभिमानी कियैक छी हम
हमरामे कनिको कियैक नहि अछि
चापलूसीबला लक्षण
कड़ूगर-साँच कहबासँ कियैक नहि
रखैत छी परहेज
फूइसकेँ फूइस साबित करबाक लेल हम कियैक
प्रस्तुत करैत रहैत छी दस्तावेज
दलित-शोषित-वंचितक हक-अधिकार लेल
हम कियैक उठबैत रहैत छी आवाज
अन्यायी-अत्याचारी सभकेँ कियैक करैत रहैत छी
प्रतिकार
तखन हमर मोन हमरा दैत अछि जवाब
परार्थी छी अहाँ
नहि अछि अहाँमे कोनो तरहक स्वार्थ
ताहि लेल अछि एतेक साहस।

•

कविता संग अनुबन्ध

हम आत्ममुग्धता आकि आत्मकुंठामे
नहि लिखैत छी कोनो कविता
आ ने कवि-कर्मक रखैत छी सौख
जनमिते बान्हि देल गेल हमरा
नीच जाति कहि धार्मिक आ सामाजिक रस्सीसँ
ओहि रस्सीकेँ फोलय लेल
हम करैत रहैत छी सदिखन संघर्ष
खोजैत रहैत छी अपना मुक्ति लेल
नव-नव रास्ता
लिखैत रहैत छी अपमान-अनादरसँ
भोगल दुख-व्यथा
तखन अनायासे बनि जाइत अछि
एगो कविता

कविता लिखबाक लेल हम नहि उड़ैत छी
कल्पनाक ऊँच आसमान
सोचैत छी यथार्थक धरातल पर
हम कियैक बनल छी अदौ कालसँ
मानसिक गुलाम
समाजमे कत' अछि हमर स्थान
एहि आत्मचिन्तनसँ जखन जगैत अछि
आत्मस्वाभिमान
तखन धधकय लगैत अछि हमर विचार
कलम बनि जाइत अछि हमर हथियार
आ वर्चस्वक संस्कृतिक प्रतिकारमे
भ' जाइत अछि एगो कविता तैयार

कविता लिखबाक लेल हम नहि लगबैत छी
शब्दकोशक महासागरमे डूबकी
बस दलित होयबाक स्वानुभूति मात्रसँ
हजारक-हजार शब्द स्वयं भ' जाइत अछि
हमरा माथमे उत्पन्न
जिनगीक तिरस्कारक अनुभूतिसँ उठैत अछि
हीयामे भावनात्मक तरंग
आ कविता लिखबाक लेल
व्याकुल भ' जाइत अछि हमर अन्तर्मन
एहना सन स्थितिमे आक्रोशक अभिव्यक्ति
बनि जाइत अछि हमर कविताक पंक्ति
आ लिखा जाइत अछि भूख-बेमारी-गरीबीसँ
फिरीसान दलित भाइक जीवनवृत्ति

सच्च पूछी तँ हम नियारिक' नहि
लिखैत छी कोनो कविता
हमरा आ हमर कवितामे बनि गेल अछि
अनुनाश्रय सम्बन्ध
हम कविता लिखबाक लेल
आ कविता हमरा लिखबाक लेल क' लेने अछि
जिनगी भरिक अनुबन्ध।

•

मैथिली साहित्य आ मिथिलाक दलित

हुनका सभकेँ चिन्ता छनि
सभ्यता आर संस्कृतिक
भाषा आर साहित्यक
ओ सभ आस्था राखय छथि
वेद आ पुराणमे
महाभारत आ रामायणमे
मनु महाराजक संहिता आ पुरुष सूक्त पर
आँखि मूनि करै जाइ छथि विश्वास
हुनका सभकेँ बुझना जाइत छनि
पाखण्ड-आडम्बरक विरोध कयलासँ हैत
धार्मिक-सांस्कृतिक परम्पराक नाश
आ वर्तमान मैथिली साहित्यमे ओ सभ
कहबैत छथि जनवादी साहित्यकार
जखनकि बहुजनक अपेक्षासँ दूर छनि
हुनकर सभक व्यवहार
तखन हम मिथिलाक दलित
कोना राखि सकैत छी हुनका सभसँ
समता-भाइचाराक आस!

•

क्षमा करब हे बाबा भीम

क्षमा करब हे बाबा भीम
हम भगवान रूपमे नहि करैत छी
अहाँकेँ पसिन
जखन कि
मानैत छी हम अहाँकेँ अपन आदर्श
रखैत छी अहाँक विचारमे आस्था
चलैत छी अहींक बताओल रास्ता
तइयो हम नहि जरबैत छी
अहाँक फोटो आगू धूप-दीप-अगरबत्ती
हम नहि चढ़बैत छी अहाँकेँ
फूल-पान-प्रसाद
अहाँक बाइस प्रतिज्ञा यादि अछि हमरा
हम भूल-चूकोसँ अपन चेतनामे
नहि लाबय चाहैत छी ब्राह्मणवाद।

•

प्रतिकार एखन बाँकी अछि

आजादी तँ मिलि गेल
अधिकार एखन बाँकी अछि
सत्तामे बरोबरिक
भागीदार एखन बाँकी अछि
बाँकी अछि युद्ध एखन
समता-भाइचाराक दुश्मनसँ
हमरा अछोप समझयबला
मनु केर वंशजसँ

आब हम समझैत छी
ब्राह्मणवादी छल-प्रपंचकेँ
मनुक्खसँ दलित बनबयबला
ओकर धर्मग्रन्थक षड्यंत्रकेँ
जखन भारतक संविधानमे
हमरा बरोबरिक अधिकार अछि
तखन हम कियैक फँसी ओकर धर्ममे
जाहिमे हमर अपमान आ तिरस्कार अछि

लोक कहैत अछि बिसरि जाउ
अदौ कालक सन्तापकेँ
लोक कहैत अछि बिसरि जाउ
बाढ़नि-तौलाबला बातकेँ
लोक कहैत अछि बिसरि जाउ
ओकर जघन्य अत्याचारकेँ
मुदा हम बिसरी तँ कोना
अपन आत्मस्वाभिमान पर भेल कुठाराघातकेँ

हम कोना बिसरि सकैत छी
शूरवीर एकलव्यकेँ
हम कोना बिसरि सकैत छी
शम्बूक ऋषिक वधकेँ
हम कोना बिसरि सकैत छी
रोहित वेमूला काण्डकेँ
हम कथमपि नहि बिसरि सकैत छी
बाबा भीमक सिद्धान्तकेँ

हजारो बर्खक सन्तापक
हिसाब एखन बाँकी अछि
शोषक-उत्पीड़क समाजक
प्रतिकार एखन बाँकी अछि
बाँकी अछि युद्ध एखन
भ्रष्ट आ बइमानसँ
हमर हक-हिस्सा खाइबला
हरेक ओहि इन्सानसँ।

•

कूपमण्डूक

बुधना नहि मानैत अछि हमर गप्प
ओकरा बुझना जाइत छैक
टीका कयने, टीक रखने
आठमा पास हमर गिरहत
कहि रहल अछि सत्त
हक-अधिकारक गप समझौला पर
ओकरा लगैत छैक जे हम क' रहल छियैक
ओकर धर्मकेँ नाश
गिरहत तेना ने सुना देने छैक
वेदग्रन्थक गुणगान

द' देने छैक वर्णव्यवस्थाक सेहो किछु ज्ञान
आ बना लेने छैक अपन मानसिक गुलाम
नीकसँ समझा देने छैक ब्राह्मणक सेवासँ
हेतौक स्वर्ग
अगिला जन्ममे भ' सकैत छेँ तोंहू गिरहत
ई जन्म छौक तोहर पछिला जन्मक चूक
दोसराकेँ कहलासँ आगि नहि मूत
पाखण्ड-आडम्बर पढ़ाक' बना देने छैक
एकदमसँ कूपमण्डूक
तखन ओ कोना सोचि सकैत अछि
अपन आ अपना समाजक हितमे
नीक-निकुत

बाप मरि गेलैक ओकर गिरहतक बापक
गुलामी करैत-करैत

आ अपनो भ' गेल एगारी-बेगारी
करैत-करैत अधबयसु
दस-बारह बर्खक बेटाकेँ सेहो देखैत छियैक
पढ़नाइ-लिखनाइ छोड़िक' सदिखन
गिरहतक काममे व्यस्त
आ हम दलित कवि चिन्तित रहैत छी
हमर समाजक बुधना सभ कहिआ होत
एहि पुश्तैनी गुलामीसँ स्वतंत्र!

•

दलित विमर्शक कविता

भनेहि अहाँ नहि दियौ
दलित विमर्शक कविताकेँ मान्यता
मुदा एहि कवितामे भेटत अहाँकेँ
वैज्ञानिक सोच, बौद्धिक चेतना आ मनुक्खता
एहिमे नहि रहैत छैक पाखण्ड-आडम्बर-अन्धविश्वास
ई नहि कहैत छैक भेदभावक कोनो बात
समतामूलक समाज, समावेशी विकास छैक
एहि कविताक आधार
ताहि लेल ई करैत रहैत छैक
वर्चस्वक संस्कृतिक बहिष्कार

यथार्थ पर आधारित ई कविता
फूइसक परिकल्पनाकेँ नहि दैत छैक मान्यता
कियैक तँ तर्कक कसौटी पर
जाँचल-परखल विचारसँ
लिखाइत छैक ई कविता
लोक जन्मसँ नहि, कर्मसँ होइत छैक महान
एहि कविताक यैह छैक सिद्धान्त

दलित विमर्शक कविताकेँ नहि चाही
पुरस्कार आकि सम्मान
एकर मात्र एकहि टा उद्देश्य छैक
दलित-शोषित-पीड़ित जनकेँ मिलैक
समाजमे उचित स्थान
संविधानक सम्मान करैत लिखल गेल
एहि कवितामे

नहि रहैत छैक चाटुकारिताक कोनो नामोनिशान
दलित विमर्शक कविताक यैह छैक पहिचान

दलित कविक आदर्श होइत छैक
महान विचारक, धर्म-समाज सुधारक
आम्बेडकर, बुद्ध, नानक, कबीर, रबिदास, फुले, पेरियार
आ हुनके सभक विचारक प्रभावसँ होइत छैक
दलित विमर्शक कविता तैयार
दोसर, अन्याय-अत्याचारक प्रतिकारमे
लिखैत काल
अपन अस्मिता लेल संघर्ष करैत रहैत छैक
एगो दलित साहित्यकार
मुदा अहाँ नहि बुझबै ई बात
कियैक तँ अहाँमे भरल अछि जातीय अहंकार
आ जाहि कारणेँ अहाँ समृद्ध नहि होम'
दिय चाहैत छियैक अपन मातृभाषा
मैथिलीक साहित्य संसार।

•

सूर्यक आस

हम अदौ कालसँ अन्हार मसानमे बैसल
खोजि रहल छी मिसिया भरि इजोत
कियो झाँपि देने अछि हमरा सूर्यकेँ
सभ्यता-षड्यंत्रक चद्दरिसँ
पहिरा देने अछि हमरा चानकेँ
फूसिऔका संस्कृतिक वस्त्र
अन्धविश्वासक महासागरमे डूबल अछि
हमर सभ तरेगन
एकहु गो नहि देखाइत अछि स्पष्ट
आ हम अदौसँ छी
एहि अन्हारसँ संत्रस्त

कियो लूटि लेने अछि हमर धरती आ आकाश
प्रकृति-पर्यावरण पर्यंतकेँ राखि लेने अछि बन्हकी
हमर भाषा-साहित्य-संस्कृति तक पर क' लेने अछि
अपन अधिकार
आधिपत्य जमा लेने अछि हमरा बसात पर
आ हम विवश भ' ल' रहल छी
गुलाम बसातमे साँस
हमरा कहिया हैत एहि अन्हारसँ उगरास

एहि अन्हारमे सुनाइ द' रहल अछि हमरा
वीभत्स आवाज
अनुभूति भ' रहल अछि
जेना हमरा अगल-बगल ठाढ़ अछि
हजारक-हजार जीबैत लास

मुक्त होबय चाहैत छी हम एहि अन्हारसँ
छोड़य चाहैत छी अन्हारवादक साम्राज्य
बढ़बय चाहै छी अपन डेग
इजोतक आसमे
कि अचानकसँ हमरा दिस बढ़ैत अछि
शोणितसँ भीजल एकहि संगे मारिते रास हाथ
आ फेर धकेलि दैत अछि हमरा
अन्हार मसानमे
भोगय लेल नारकीय सन्ताप

मुदा हमरा आजादीमे आस्था अछि
आ इजोतमे विश्वास
एक-ने-एक दिन तोड़ि देबै हम
ई पाखण्ड-आडम्बरसँ निर्मित देबाल
आ क' लेबय स्वयंकेँ चेतनासँ उजास
ई अछि हमरा दृढ़ विश्वास
हम मिसिया भरि इजोतक नहि
पूरा सूर्य पर लगौने छी आस।

•

अन्धविश्वासक गाछ

कविजी विचारधाराक खाद-पानिसँ
सम्पुष्ट राखय चाहैत छथि
अपन पुरखाक रोपल अन्धविश्वासक गाछकेँ
जे भ' गेल छैक आब ठुट्ठ पत्रहीन
ओ उगाबय चाहैत छथि
फेरसँ ओहि गाछ पर पाखण्डक पनुगी
आ आडम्बरक फूल-पात
आ तोड़' चाहैत छथि
अन्धविश्वासक फल
फल जे आम आदमीक लेल छैक माहुर
आ हुनका लेल छनि देवाहार
एहि फलकेँ खयबाक कल्पना मात्रसँ
हुनका मोनमे उत्पन्न भ' जाइत छनि
शोषण, दमन, उत्पीड़नक विचार
जागृत भ' जाइत छनि
छल, प्रपंच, षड्यंत्रबला सभ संस्कार
आबि जाइत छनि जातीय अहंकार
आ सोचय लगैत छथि
मात्र हमहीं टा छी मानवक तारणहार

ओ धर्मक चश्मा पहिरने
निहारैत छथि बेर-बेर अन्धविश्वासक गाछ
जे एखनो छैक ठुट्ठ आ पत्रहीन
कतहुसँ कोनो कनोजरि नहि निकलैत देखि
ओ भ' जाइत छथि खिन्न
आ फेर डूबि जाइत छथि आकंठ

ढोंगी सभ्यता आ ठक-फूसियाही संस्कृतिमे
छल-प्रपंच-षड्यंत्रक पोथीमे
आह! कतेक नीक छल
हमर पुरखाक इतिहास
बिनु मेहनतियेकेँ मिलि जाइत छलनि
हुनका सभकेँ छप्पन भोगक थार
लोकदेवता मानि लगबैत रहैत छलनि
जय-जयकार
आब कहाँ रहल ओ समय
आब अछि तँ मात्र चारू दिस उपहास

मुदा कविजी नहि मानैत छथि हारि
कियैक तँ यैह गाछ छनि हुनकर
भूत-भविष्य आ वर्तमानक आधार
ओ भाषा-साहित्यसँ मजगूत करय चाहैत छथि
ओहि गाछक जड़िकेँ
ओ कथा-कवितासँ पनुगाबय चाहैत छथि
ओहि गाछक कनोजरिकेँ
मुदा हुनकर सभ परिश्रम भ' जाइत छनि बेकार
कियैक तँ आब माटिओकेँ नहि छैक
एहि तरहक माहुरक गाछ स्वीकार
एहि तार्किक समय आ विवेकी बसातमे
जेना-जेना भ' रहल छैक ओ गाछ अस्तित्वविहीन
तहिना-तहिना कविजीक पैरसँ घसकि रहल छनि जमीन।

•

हम नहि छी एकवचन

मोन हल्लुक भ' जाइत अछि
जखन हम लिखि लैत छी एगो कविता
कहि दैत छी आखरसँ अपना मोनक बात
अवसादग्रस्त होम'सँ बचि जाइत छी
हम बेर-बेर
जखन हम पन्ना पर राखि दैत छी
अपन भोगल दुख-दर्द
व्यथा-विषाद-सन्ताप

मनुक्ख छी हम, कतेक करी बर्दाश्त
डेग-डेग पर छल-प्रपंच आ ईर्ष्या-द्वेष
सभतरि जाति-पाति, ऊँच-नीचक भेद
अपमान आ अनादरसँ व्यथित भ' जाइत अछि
हमर मोन
तखन कविता लिखबाक लेल
कलम पकड़ैत छी हम
एहना सन स्थितिमे
शोषक-उत्पीड़क सभक विरोधमे
लिखा जाइत अछि इनकिलाब
पुछा जाइत अछि अपन धर्मशास्त्रसँ
किछु कड़ुगर सवाल
आ लोकसभ अनेरो भ' जाइत अछि
हमरासँ नराज
जेना हम क' रहल छियैक कतेक
बड़का अपराध
हँ, कहिओ काल अबैत अछि हमरो जिनगीमे

उत्साह, उमंग, उल्लास
तखन मोन कर' लगैत अछि
लिखी हास-परिहासक बात
मुदा हम कहाँ रहि पबैत छी एकवचन
हमर व्यक्तित्वमे सम्मिलित भ' जाइत अछि
बहुते रास शोषित-पीड़ित जन

हरिया डोमकेँ एखनो धरि कहाँ
मिललय समाजमे उचित स्थान
जूता सियैत सरजुग कक्का नित दिन
सहि रहल छथि एखनो अपमान
गंगवा मुसहर आ ओकर नाँगट-उघार बाल-बुतरू
एखनो छैक भूख-बेमारीसँ फिरेसान
सूगर चरेबाक कारणेँ सिलियाकेँ
लोक अनेरो क' दैत छैक बदनाम
दलित टोला एखनो छैक बनल
बिनु शिक्षाक अन्हार मसान
तखन हम कोना करी सभ्यता-संस्कृतिक गुणगान

लोक कहैत अछि बनि जाउ चाटुकार
मिलैत रहत पुरस्कार सम्मान
मुदा स्वाभिमान बेचिक'
हम नहि कमाय चाहैत छी नाम
आ ने हम अपना कविताकेँ
बनबय चाहैत छी गुलाम

हम चाहैत छी हमरे जकाँ स्वतंत्र आ निर्भीक
रहय हमर कविता
हम चाहैत छी हमरा संगे समता आ भाइचाराक
गीत गाबय हमर कविता

हम चाहैत छी हमर कलम चिंगारी बनि
अपन हक-अधिकारक लेल
लोकक हीयामे लगबैत रहैक आगि
हम चाहैत छी हमर कवितासँ
लोक चेतना सम्पन्न बनि जाइ
हम चाहैत छी हमर कविता जरूरति जड़ला पर
बनि जाइ हमर प्रतिरोधक हथियार
कियैक तँ अन्यायी-अत्याचारी सभक
सेहो करबाक अछि हमरा प्रतिकार।

•

एकलव्य छी हम

हँ, हम एकलव्य छी
अछोप, औंठाबला
श्याम रंगक
हमर निशाना अछि अचूक
तरकसमे भरल अछि तीर
लड़बाक लेल उत्साहित छी हम
शूरवीरक उपाधि लेल लालायित छी हम
मुदा दबा देल जायत हमर सभ प्रतिभा
आ मटियामेट क' देल जायत हमर सभ परिश्रम
जखन गुरु द्रोणाचार्य पुछता हमरासँ जाति
आ क' देताह असफल
फेरा औंठा रहने आकि नहि रहने
हमरा कहाँ कोनो पड़ैत अछि फर्क
ओ नियारने छथि पहिनहिसँ
अर्जुने टा कहाओत शूरवीर
यैह अछि शूद्र एकलव्य सभक तकदीर।

•

कठघरामे धर्मशास्त्र

जखन हम पढ़ैत छी
अपन पुरखाक अभिशप्त इतिहास
तँ जेना इतिहासक पन्ना पर
जीवित भ' जाइत अछि
हमर पुरखा सभक लहास
आ सुनबय लगैत अछि
अपन भोगल वीभत्स व्यथा
देखबय लगैत अछि
यातनासँ दागल
अपना देहक हिस्सा
पूछ' लगैत अछि निर्दय सभ्यता
आ खुनियाँ संस्कृति पर
बहुते रास सवाल
तखन हम देखैत छी
कठघरामे खड़ा भ' जाइत अछि
हम धर्म आ धर्मशास्त्र

हमर पुरखाक की छल अपराध
जे देल गेल अपार दुख, अनन्त कष्ट
आ अनगिनत यातना!
कियैक भेल हुनका संगे
एतेक शोषण आ प्रतारणा
ऊँच-नीच आ छुआछूत जनित भेदभाव
के कयलक परिकल्पना
जखन हम एहि प्रश्नक उत्तर खोजय लेल
पढ़य लगैत छी धर्मशास्त्र

तँ अपराधी सभक खुनियाँ आँखि जकाँ लाग' लागैत अछि
वेद-पुराण, महाभारत-रामायण आदि सभ शास्त्र
एकर करिआ आखर सभ भ' जाइत अछि
सूखल शोणितक रंग
आ एहि पोथीसँ निकलय लगैत अछि
शोषण, दमन उत्पीड़नक दुर्गंधि
जाहिसँ उत्पन्न घृणा आ आक्रोशसँ हम
एहि शास्त्रकेँ
उठाक' राखि दैत छी हठात्
आ सोचय लगैत छी तुलसी-वाल्मीकि-वेदव्यास
आदि विद्वान् सभ मनुक्खतासँ कियैक केलथि
एतेक नम्हर विश्वासघात

मुदा सुनि लिअ गोस्वामी तुलसी दास, गुरु द्रोणाचार्य
आ मनु महाराज
अहाँ जे खड़ा केलियैक मनुक्ख-मनुक्खक बीच
घृणाक देबाल
एक-ने-एक दिन अबस्स भ' जायत विध्वंस
किछु नहि रहत शेष
कियैक तँ बुद्ध, नानक आ कबीरक
सेहो छैक ई देश
आ हिनका सभक वाणीसँ सिंचित भ' रहल अछि
भारतक संविधान आ नवका समाज।

•

ईश्वर अबस्स भेटत

नहि भेटत ईश्वर रामायण-महाभारत आ बाइबल-कुरानमे
नहि भेटत ईश्वर मन्दिर-गुरुद्वारा आ मस्जिदक अजानमे
नहि भेटत ईश्वर गंगा-गोदावारी आ कुम्भ स्नानमे
ईश्वर अबस्स भेटत सेवा-सद्भावना आ जनकल्याणमे

नहि भेटत ईश्वर धरती-पताल आकि फूजल आसमानमे
नहि भेटत ईश्वर मक्का-मदीना आकि वेटिकनक गाममे
नहि भेटत ईश्वर द्वारिका-अयोध्या आ पुरी चारू धाममे
ईश्वर अबस्स भेटत प्रेम-सिनेह आ क्षमादानमे

नहि भेटत ईश्वर होम-जाप आकि धार्मिक अनुष्ठानमे
नहि भेटत ईश्वर व्रत-उपास आकि पाबनि-रमजानमे
नहि भेटत ईश्वर मूर्ति-पीड़ी आकि गहबर स्थानमे
ईश्वर अबस्स भेटत माय-बाप, गरीब निस्सहायक सम्मानमे।

•

आगि

बाबूजी नान्हिटामे अहाँ सिखबैत
रहैत छलहुँ हमरा
बाउ रौ आगि नहि छू
नहि तँ जरि जेबेँ
आगि नहि मूत
नहि तँ मरि जेबेँ
आचार-विचार-व्यवहारसँ एकदम
शीतल बनाक' राखय चाहैत छलहुँ हमरा
आ नहि रखैत छलहुँ अपनो हीयामे
कोनो तरहक आगि

अन्याय-अत्याचार देखिओक'
शोणित नहि खौलैत छल अहाँक
आ ने अपना हक-अधिकारक रक्षा लेल
सुनगैत छल आक्रोश
धर्मक डोरासँ बीनल जाति-आडम्बरक
पोशाक पहिरने
अहाँ अपमान-अनादर तककेँ नहि
करैत छलहुँ विरोध

मुदा क्षमा करब हे स्वर्गवासी पिताजी
हम अहाँक सिद्धान्त पर नहि रहलहुँ ठाढ़
जिनगीक हरेक तरहक आगिक प्रति
अहाँकेँ उदासीन देखिक'
धधकैत रहैत छल हमरा मोनक विचार
अहाँक अति सहनशील व्यवहार आ विचारक कारणेँ

हमरा व्यक्तित्वमे चलि आयल
अहाँक विपरीत संस्कार

हम नहि करय चाहैत छी अन्याय
आ ने सहय चाहैत छी अन्याय
दोसराक हक-अधिकार लूटब हमर नजरिमे
अछि अपराध
तँ अपन हक-अधिकारक रक्षा लेल
हम अपन शोणित बहबय लेल सेहो रहैत छी तैयार
ऊँच-नीचक भेदभाव तँ हमरा किन्नहुँ
नहि अछि स्वीकार
हम चाहैत छी बरोबरिक अधिकार

हे स्वर्गवासी पिताजी
हम समझैत छी आगिक महत्व
कोनो तरहक धातुकेँ पहिने आगिमे जरिक'
होम' पड़ैत छैक लाल तप्त
तखनहि पबैत अछि ओ अपन निश्चित आकार
आ बनि जाइत अछि राजा-महाराजाक गराक हार
तहिना जिनगीक दुख-सन्ताप रूपी
आगिक पीड़ा सहि होइत छैक
एगो नीक व्यक्तित्वक निर्माण
ताहि लेल हम अहाँक पौत्रकेँ
दैत रहैत छी ई ज्ञान

बाउ रे, जीबैत धरि नहि बनिहेँ लहास
छूबैत रहिहेँ आगि
होइत रहतौक 'हम जीबैत छी'क अनुभव।

•

दलितक टोल

की कहू भाइ हम, दलित टोलाक दशा
एहि टोलामे सदिखन करैत अछि
लोक ताड़ी-दारु पीबिक' तमाशा
भूख-गरीबी-बेमारीसँ ककरो ठीक नहि अछि
देहक दशा
नान्हि-नान्हि छौंड़ा सभ करैत रहैत अछि
गाजा-भाँगक नशा
आ नहि कियो जाइत अछि इसकुल
सभकेँ सभ रहैत अछि गोली-कौड़ी खेलाइमे मशगुल

कहल जाइत छैक— घर बाल-बुतरुक
पहिल पाठशाला होइत छैक
एहि टोलामे राति-दिन गारि-गिन्जन
मारि-पीट, हल्ला-गुल्ला होइत छैक
कतयसँ अओतैक बाल-बच्चामे नीक संस्कार
जखन कि अविभावक सभ स्वयं रहैत अछि
किदनि खोलिक' नाचय लेल तैयार
आ हम दलित कवि चिन्तित रहैत छी
कोना हैत हमरा समाजक उद्धार

नशा, अशिक्षा, अन्धविश्वाससँ एखनो अछि
ई टोल अन्हार मसान
बाबा भीमराव आम्बेडकरक सिद्धान्तसँ अन्जान
नहि कियो पढ़ैत अछि
सभ अपनेमे लड़ैत अछि
आ संघर्ष की करत कपार...

राति-दिन नशासँ बेहोश पड़ल रहैत अछि

डोमसँ चमार छुआइत अछि
आ चमारसँ मुसहर
आ मुसहरसँ धोबी-दुसाध
अदौ कालसँ एखन धरि
उघैत आबि रहल अछि दोसराक देलहा
पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास
एहना स्थितिमे कोना हेतैक
दलित सभक विकास

मुदा दोख ककर, सरकारक
नहि, एकदम नहि
आजादीसँ एखन धरि कमोबेस हरेक सरकार
करय चाहलक दलितक उत्थान
मुदा स्वयं दलिते नहि चाहैत अछि
अपन कल्याण
आ ने पढ़ल-लिखल दलित
अपन समाज पर दैत अछि धिआन
आरक्षणक बल पर जखन किछु दलित
क' लैत अछि सरकारी चाकरी
तखन नहि बुझैत अछि
अपन दलित भाइक लाचारी
ओ अपनाकेँ मानय लगैत अछि पैघ विद्वान
आ एहि घमंडमे आबि
दलित टोलासँ अलग भ' बना लैत अछि
अपन मकाम
सच्च पूछी तँ एहने बइमान सभक चलते
दलित टोला अछि एखनो अन्हार मसान।

•

बौकनाथ बलगोबिना

हे रौ बौकनाथ बलगोबिना
जँ अनठियबैत रहबेँ एहिना
लोकसभ बुझतहु तोरा लहास
दखल क' लेतहु सभ चास-बास
फेर लैत रहिहेँ मुँहबजना
हे रौ बौकनाथ बलगोबिना

जेना सहलहु पुरखा प्रतारणा
आब कि तोंहू सहबेँ ओहिना
कर नहि आँखि मूनि बिसवास
सीख पकड़ब झूठ आ साँच
जगाबय अपना मोनक चेतना
हे रौ बौकनाथ बलगोबिना

कमाइत छै बैल, कमाइत छैक तहिना
तइयो लगैत छै भीखमँगना
लड़िक' माँग अपन अधिकार
नहि सह शोषण-अत्याचार
नहि तँ ठकि लेतहु ठकफुसना
हे रौ बौकनाथ बलगोबिना

शिक्षा शेरनी दूधक जेना
बाल-बुतरुकेँ पढ़बय केहुना
चलि एतहु ओकरामे संस्कार
सीखि जेतहु बाजब-व्यवहार
गरजतहु, शेर गरजैत छैक तहिना
हे रौ बौकनाथ बलगोबिना।

•

जातिक विनाश

हमरा नजरिमे देशक उत्थान लेल
जरूरी अछि जाति-पातिक विनाश
मनुक्खक कल्याण लेल
जरूरी अछि वर्ण-व्यवस्थाक सत्यानाश
आजादीक पचहत्तरि सालक बादो
लोकतंत्र नहि भेल अछि सफल
तकर सभसँ पैघ कारण अछि
लोकक माथमे ठूसि-ठूसिक' अछि
जाति-पातिक विचार भरल
नेता जखन अपन जातिसँ होइक तँ
अपराधी, बलात्कारी, भ्रष्टाचारी सभ जायज
आन जातिक चरित्रवान, कर्मठ, जुझारुओ नाजायज
राजनीतिक शुचिता आ देशक समुचित विकास लेल
जाति-पातिक विचार त्यागब जरूरी अछि भाइ

सामाजिक न्यायक सेहो सभसँ पैघ दुश्मन अछि
ई जाति-पातिक विचार
गाम-समाज, टोल-मोहल्लामे बहुसंख्यक जातिक लोक
अल्पसंख्यक जातिक लोक पर
अनेरो करैत रहैत छैक शोषण-अत्याचार
छोटछीन बातकेँ बतकुटौअलि क' चढ़ा दैत छैक
लोक जातियताक रंग
जखन अबैत छैक जातियताक प्रश्न
भाइ यौ, सामाजिक सौहार्द्र-सद्भावना लेल
जरूरी अछि त्यागब जातिक दम्भ
हमरा नजरिमे जाति प्रथा आ वर्ण व्यवस्था

कहिओ नहि रहल उचित
मुट्ठी भरि धूर्त लोक
बहुजनकेँ श्रम विभाजनक नाम पर
अदौ कालसँ आइ धरि
बनबैत आबि रहल अछि मूर्ख
हर बहय से खढ़ खाइ आ बकरी खाइ अचार
एही सिद्धान्त पर आधारित अछि
वर्ण-व्यवस्था आ जाति-पातिबला विचार
जानि ने एहि प्रथाक परिकल्पना कयलक कोन सार
जनमिते सटि जाइत छैक मनुक्खक कपार

मुदा एहू घृणित प्रथा आ व्यवस्थासँ
पाओल जा सकैत अछि मुक्ति
जखन लोक देबय लगताह
अन्तरजातीय बियाहक स्वीकृति
चलय लगताह सभ
बुद्ध, नानक, कबीरक बताओल मार्ग
तँ निश्चित भ' सकैत अछि
बाबा भीमक जाति मुक्त भारतक सपना साकार

हँ, किछु पुरातनपंथी आ कट्टरवादी सोचक लोककेँ
हमर गप लगैत हेतनि मिरचाइ जकाँ भकभकाक'
जिनकर नीयति बनि गेल छनि
जे मनुक्खकेँ शूद्र-अतिशूद्र कहि राखी दबाक'
ओ देखा सकैत छथि हमरा
दोसराक धर्ममे जाति-पातिक उदाहरण
मुदा हमर दावा अछि
कि कोनो आन धर्ममे नहि भेल हेतैक एतेक
जतेक कि हिन्दू धर्ममे भेल छैक
जाति-पाति आ वर्ण-व्यवस्थाक नाम पर

मनुक्ख द्वारा मनुक्खकेँ जानवर जकाँ शोषण
ओ लगा सकैत छथि हमरा पर आक्षेप
जे हम बिगाड़ि रहल छियैक
धर्म-संस्कृति आ सामाजिक अवधारणा
मुदा हमर व्यक्तिगत विचार अछि
जे कोनो धर्म-संस्कृति आकि समाज
घृणा-विद्वेष पर आधारित अछि
ओकरा संगे नहि राखी हम अपन सहानुभूति आ संवेदना
एहि एकैसम सदीक सुन्दर भारत आ उन्नत भारतक लेल
हम जाति-पाति, धर्म-संस्कृतिक नहि
वैज्ञानिक सोच आ वर्गीय चिन्तनक
करय चाहैत छी परिकल्पना।

•

लड़ैत रहब विचारधाराक लड़ाइ

जाधरि अहाँ जाति-पाति, ऊँच-नीच छोड़ि
मनुक्खता पर नहि आयब भाइ
ताधरि हम अहाँक संग जारी राखब
विचारधाराक लड़ाइ
सच्चक हथौड़ीसँ करैत रहब हम
फूसिऔका कल्पना पर आधारित
अहाँक धर्मग्रन्थ पर आघात
तर्कसँ हटबैत रहब
पाखण्ड-आडम्बरक एक-एक पोशाक
पूरा बेपर्द क' देब हम अहाँक धर्मशास्त्रकेँ
वैज्ञानिक सोच आ संविधान सम्मत बातसँ

पृथ्वीक भार उठौने अछि शेषनाग
बाप रे बाप एतेक बड़का झूठ
हनुमानजी घोंटि गेलखिन
पृथ्वीसँ कएक गुणा बड़का सूर्य
पाथर-पहाड़, नहरि-बसात, धरती-आकाशसँ
जन्मा दैत छियैक मनुक्ख
यौ भाइ, हम नहि छी कूपमण्डूक
हम बुझैत छी अहाँ सभक षड्यंत्र
अपन वर्चस्व स्थापित करबाक लेल
छल-प्रपंच, ईर्ष्या-द्वेषसँ भरने छी धर्मग्रन्थ

तैंतीस करोड़ देवता सभक हाथमे हथियार
धर्मक उद्देश्य शान्ति-सौहार्द्र-सद्भावना छैक
नहि कि हिंसाक कारबार

समता-भाइचारा स्थापित करबाक लेल
हम पूछैत रहब शम्बूक वध
आ एकलव्यक औंठा पर सवाल
वृन्दा-अहिल्या आदि स्त्री विमर्श पर
अहाँ नहि द' सकैत छी उचित जवाब
अमानवीय अत्याचारसँ भरल अछि अहाँक धर्मशास्त्र
भाइ यौ, आबहु करू सच्चकेँ स्वीकार
आब नहि चलयबला अछि
अहाँक फूइसक कारोबार...।

•

हम गलत नहि छी भाइ

हँ, हम खराब छी अहाँक नजरिमे
जे कहैत छी धर्मसँ पैघ होइत छैक मनुक्खता
हँ, हम अधलाह छी अहाँक विचारमे
जे कहैत रहैत छी ठीक नहि छैक ई वर्ण-व्यवस्था
हँ, हम विधर्मी छी अहाँक सोचसँ
जे नहि करैत छी अहाँक पाखण्ड-आडम्बर पर विश्वास
हँ, हम बड़ ढीठ छी अहाँक समझसँ
जे अहाँक फूइस कल्पना पर करैत रहैत छी आघात

मुदा एगो आग्रह अछि अहासँ
जातिक दम्भ आ वर्ण-व्यवस्थाक परदा हटाक'
कहिओ ताकब अपना मोनक दुआरि
सोचब मनुक्ख बनि एकान्तमे
धर्म-संस्कृतिक मान्यता-परम्पराकेँ चद्दरि उतारि
हीयाकेँ क' लेब समुद्र
काहि-कलह, घृणा-विद्वेषकेँ बिसारि
आ फेर करब अन्तःकरणसँ न्याय
अहाँकेँ कहय पड़त
'अहाँ गलत नहि छी भाइ!'

•

हम ठीके छी जीबैत इन्सान

मोन होइए मनुक्खतासँ विमुख भ'
बनि जाइ भगवान
काम-क्रोध, लोभ-मोहसँ विहीन
काहि-कलह, घृणा-विद्वेषसँ हीन
नहि कोनो स्वार्थ आ नहि कोनो परमार्थ
बैसि जाइ धिआन लगाक'
एकदमसँ एकान्त स्थानमे
विचरण करी भगवाने जकाँ फूजल आसमानमे
नहि सुनी गरीब-गुरबाक दारुण पुकार
चुपचाप देखैत रहि हत्या-बलात्कार
चाहे दुनियाँमे मरैत रहैक रौदी-दाहरसँ
असंख्य लोक
चाहे माहमारीक बढ़ैत रहैक प्रकोप
हम भगवानक दम्भमे रहय चाहैत छी मग्न
कान पर ढेला ध' हम सुतय चाहैत छी नीन मगन
लोक चढ़बैत रहय फूल-पान-प्रसाद
सभ लगबैत रहय हमरा नामे जय-जयकार
हम भगवान रहब तँ कियैक पड़त
हमरा आमजनसँ सरोकार
भनेहि होइत रहौक धरती पर शोषण-अत्याचार
बस आस्था-विश्वासक नाम पर
पूजैत रहय हमरा संसार
भगवानक अवगुण खोजब ककर छैक ओकाति

मुदा भगवान जकाँ हमर हीया कहाँ अछि कठोर
ककरो दुख-तकलीफमे देखिक'

फटसँ चूबि जाइत अछि आँखिसँ नोर
हम मनुक्ख छी, हमरामे अछि स्वार्थ-लिप्सा, ईर्ष्या-द्वेष
सहित मारिते रास अवगुण
मुदा गरीब-गुरबाक हाकरोस पर ओ रहैत छथि सुतल
आ हमर फूजि जाइत अछि निन्न
अन्याय-अत्याचार देखिक' हम नहि रहि सकैत छी
भगवान जकाँ निष्प्राण
हम ठीके छी आक्रोशक अभिव्यक्ति आ
प्रतिरोधक स्वर संग जीबैत-जागैत इन्सान।

•

अन्योन्याश्रय सम्बन्ध

किुछओ दिन लेल
जिनगीक झंझटिमे पड़ि
जँ लिखनाइ क' दैत छियैक हम बन्न
तँ जेना आन्हर बनि जाइत छी हम
फेर हमरा नहि किछु देखाइत अछि
ने देश, ने समाज आ ने अपन संस्कृति
ने कोनो व्यक्ति आ ने ई सुन्दर प्रकृति
जेना मृतप्राय भ' जाइत अछि हमर सभ विचार
तहिना नहि रहैत अछि किछु फुराइत
कान पर ढेला ध', बहीर भ'
सुनैत रहैत छी गरीब-गुरबाक हाकरोस
तइयो मोनमे नहि उठैत अछि
मिसिओ भरि आक्रोश
सच्च पूछी तँ लिखनाइ छोड़लासँ
बन्न भ' जाइत अछि हमर पाँचो ज्ञानेन्द्री
आ लहास बनि जाइत छी हम
एतबा अछि हमरा लिखब आ जिअबमे
अन्योन्याश्रय सम्बन्ध।

•

मृत्युक डर

हँ, डर अछि
हमरे-अहाकेँ नहि
सगर संसारक लोककेँ मृत्युसँ
जखन कि मृत्यु यूनिवर्सल अछि
आ हमरा-अहाँक डर हवा फूइस

मृत्यु निश्चित थिक
आ जिगनी अनिश्चित
आइ ने काल्हि, काल्हि ने परसू
जकरा जाहि दिन लिखल अछि
मृत्यु अयबे टा करत
आ हम-अहाँ ओकरा एकहु पल ने टालि सकब
राजा-रंक कि बड़का-बड़का सन्त-महन्थकेँ
नहि रहलै आइ धरि मृत्यु पर
मिसिओ भरि आधिपत्य
मृत्यु थिक परम सत्य

फूसिओसँ बड़ प्रेम अछि हमरा-अहाँकेँ
आ सत्यसँ घोर घृणा
कियैक तँ
हमरा-अहाँक आदति बनि गेल अछि
फूइस बजबाक, फूइस देखबाक आ फूइस सुनबाक
चौबीसो घंटा फूइसक संगे रहबाक
तखन हमरा-अहाँकेँ सत्य कोना देखायत

अन्याय-अत्याचार देखिक' नजरि घुमा लैत छी
गरीब-गुरबाक हाकरोस सुनिक' अनठिया दैत छी

कियैक तँ ई सभ सत्य थिक
एतय मरि जाइत अछि
हमर-अहाँक मानवीय संवेदना
आ काल्पनिक कथा-कहानी-उपन्यास पढ़ि
आकि नाटक-प्रहसन चलचित्रकेँ देखिक'
दृश्यक संगे भावुक भ'
कानय आ हँसय लगैत छी हम-अहाँ
सदिखन फूइसक संग
रहैत अछि हमर-अहाँक भावना

पाथरक मूर्ति दूध पीबैत अछि कि नहि
तकर हमरा-अहाँ लग नहि अछि कोनो प्रमाण
मुदा कतेको साक्ष्य भेटि जायत कि
दूधक अभावे मरि गेल कोनो गरीबक सन्तान
मुदा एतय तँ फूइस
इतरक सुगन्धि जकाँ गमागम करैत अछि
आ सत्य लोककेँ चिराइन भभकैत छैक

सच्च पूछी तँ
जीबैत भरि हम-अहाँ लहास बनल रहैत छी
आ अनेरो मृत्युसँ डरैत रहैत छी!

•

हँ, हम अम्बेडकरवादी छी

हँ, हम अम्बेडकरवादी छी
हमर आदर्श छथि बाबा भीम राव अम्बेडकर
मुदा एहि लेल नहि कि ओ हमर
समाजक लोक छलाह
हँ, एहि लेल अबस्स जे ओ अपन चिन्तनमे
अपन दर्शनमे स्वतंत्रता-समानता
बन्धुता-धर्मनिरपेक्षता सन मानवीय मूल्यक समर्थन
कयने छलाह

हँ, हम बुद्धकेँ मानैत छियनि महान
मुदा एहि लेल नहि
कि ओ एगो नव धर्म स्थापित कयने छलाह
हँ, एहि लेल अबस्स जे ओ राज-पाट छोड़ि
लोककेँ मानवता आ विश्वबन्धुताक पाठ पढ़ौने छलाह
शान्ति-अहिंसाक राह देखौने छलाह

हँ, हम कबीरक अनुयायी छी
मुदा एहि लेल नहि जे ओ निर्गुन ब्रह्ममे
करैत छलाह विश्वास
मुदा एहि लेल अबस्स जे ओ साम्प्रदायिक
सौहार्द्र-सद्‌भावना लेल कयलनि अथक प्रयास

हँ, हम रविदास-नानककेँ मानैत छियनि सन्त
मुदा एहि लेल नहि कि ओ भक्तिक
सरल-सुलभ मार्ग बतौने छलाह
मुदा एहि लेल अबस्स
जे ओ यथासम्भव समाजसँ पाखण्ड-आडम्बर

मेटेबाक लेल करैत रहला प्रयत्न

हम फुले-पेरियारकेँ मानैत छियनि विद्वान
मुदा एहि लेल नहि
कि ओ भगवानक अस्तित्व पर उठौने छलाह प्रश्न
हँ, एहि लेल अबस्स जे ओ
ओ धर्ममे सीखौने छलाह तर्क
लोककेँ कूपमण्डुक बनबासँ करैत रहला
आजीवन सतर्क

स्वतंत्रता सेनानीमे भगत सिंह छथि
हमर पहिल पसन्द
मुदा एहि लेल नहि जे हुनका कम उमेरमे
देल गेल रहनि फाँसी
हँ, एहि लेल अबस्स जे ओ पहिल व्यक्ति रहथि
जे राजनीतिमे धर्मक मिलाबटि पर जतौने छलाह असहमति

सच पूछी तँ हम कल्पना पर नहि
यथार्थ पर रखैत छी विश्वास
मानव छी, मानवता स्थापित होइक
यैह रहैत अछि हमर सदिखन प्रयास।

•

धिक्कार अछि, धिक्कार

बहुत किछु बदललैए समाजमे
हम करैत छी स्वीकार
आइ द्रोणक वंशज द’ रहल छैक
एकलव्यक उत्तराधिकारीकेँ पुरस्कार
बस शर्त यैह टा
जे अहाँ धनुष-वाण चलबैक
नहि राखैत छी अधिकार
आ ई स्वार्थी समाजक गद्दार सभ
एहि शर्तकेँ क’ रहल छैक हँसी-खुशी स्वीकार
एहेन प्रतिभा आ अभिव्यक्ति बेचिक’
पुरस्कार खरीदनिहार चाटुकार लोककेँ
धिक्कार अछि, धिक्कार।

•

नहि चाही युद्ध

भाइ यौ, हथियार नहि कहैत छैक कहियो
कि हमरा अछि शोणितक प्यास

तोप-टैंक, गोला-बारुद, बन्दूक
नहि जाइत छैक अपने मोने युद्धक द्वार

सेना-सिपाही तककेँ हार्दिक इच्छा रहैत छैक
जे यथासम्भव रहैत रही रणक्षेत्रसँ दूर

देशक आम जनता तक नहि चाहैत छैक
जे होइक युद्ध

मुदा सत्ताक स्वार्थ, धार्मिक उन्माद आ
जातीय अहंकारकेँ की कहबैक
एकरा सभकेँ चाही मानवक खून!

•

दलितोमे अछि जातिवाद

दलितोमे अछि खूब जातिवाद
डोम, दुसाध, मुसहर, पासी, धोबी, चमार
सभ रखने अछि एक-दोसराक संगे छुआछूत
बला व्यवहार
सभकेँ छैक अपना जातिक अहंकार
पढ़लो-लिखल दलित नहि पढ़ैत अछि
आम्बेडकर, फुले, पेरियार
दलित चेतनाक अभावमे
ई सभ मानैत अछि आम्बेडकरकेँ
मुदा व्यवहारिक जिनगीमे अछि
मनुवादक शिकार
तखन कोना हेतैक
बाबा साहब भीम राव आम्बेडकरक
जातिमुक्त भारतक सपना साकार

जातीय संगठन बनाक' क' रहल अछि
ई सभ दलित एकताक नोकसान
बाबा साहेबक संदेश
'शिक्षित बनू, संगठित रहू आ संघर्ष करू'केँ
जानिओक' भेल अछि अनजान
तखन कोना मिलतैक एकरा सभकेँ
समाजमे मान-सम्मान
जखन कि बापे-पुरखा जकाँ ई सभ
वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथामे पड़ि
कराबय चाहि रहल अछि अपन अपमान

हे यौ दलित समाज सुधारक आ विद्वान
हक-अधिकारक लड़ाइ लेल जरूरी छैक
आत्मसम्मान
आ दलितक आत्मसम्मान लेल जरूरी छैक
चलब बाबा भीमक सिद्धान्त
तखनहि मिलत सत्ता आ समाजमे
उचित स्थान
नहि तँ जातीय अहंकारक चक्करमे
बनल रहब सभदिन मानसिक गुलाम।

•

रहय दिअ मनुक्ख

हम अलग छी अहाँसँ
बातमे, विचारमे
व्यवहारमे, संस्कारमे
धर्म-संस्कृति, भाषा-साहित्य तकमे छी
अहाँसँ भिन्न
अहाँ शोषक
हम शोषित नहि भ' सकैत छी एक
कोनो दिन

अहाँकेँ रहैत अछि सदिखन जातीय अहंकार
वर्ण व्यवस्थाक घमंड
आ हम अदौ कालसँ आइ धरि
लड़ैत आबि रहल छी
अपन अस्मिताक लेल जंग
अहाँक षड्यंत्र
हमरा मनुक्ख रहितहुँ
मनुक्ख हेबाक अनुभूति पर खड़ा कएने रहल
मारिते रास प्रश्न

अहाँ गामसँ अलग रखलहुँ हमर टोल
जबर्दस्ती बान्हैत रहलहुँ हमरा गरदनिमे
कएक तरहक ढोल
मनगढ़ंत प्रथा बनाक'
करैत रहलहुँ सामाजिक बहिष्कार
राड़-रोइया, सोलकन, अछूत कहि
करैत रहलहुँ अपमान, अनादर, तिरस्कार

सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक
सभ तरहक लगेलहुँ हमरा पर प्रतिबन्ध
हमर हक-अधिकार आ स्वतंत्रताक
करैत रहलहुँ सदिखन हनन
आ आब मन्दिरक चन्दामे
साम्प्रदायिक दंगामे
आ भोटक धन्धामे कहि दैत छी तुरन्त
जे अहूँक धर्म अछि सनातन

भाइ यौ, बन्न करू ई अनर्गल प्रलाप
बहुत अध्ययन आ संघर्षक पछाति भेल अछि
हमरामे बौद्धिक चेतनाक विकास
बड़ मस्किलसँ भेलहुँ अछि धर्मसँ विमुख
हमरा नहि बाँटू धर्म-सम्प्रदायमे
रहय दिअ मनुक्ख।

•

सनकी छी हम

हँ, हम अपनाकेँ स्वीकारैत छी
थोड़ेक सनकी आ बताह
जँ समझदार रहितहुँ
तँ आने दलित कवि जकाँ हमहुँ नहि
करितहुँ दलित हक-अधिकारक परवाहि
हुनके सभ जका हमहुँ करैत रहितहुँ
मनुवादी साहित्यकार सभक अन्धभक्ति
मुदा हम तँ छी सनकी
नहि दबाक' राखि पबैत छी
अपन आक्रोशक अभिव्यक्ति
आ नहि रखैत छी मंच-माला-पाग आकि
पुरस्कार-सम्मानमे आसक्ति
हम ओहि सभ मान्यता आ परम्पराकेँ
दैत रहैत छियैक चुनौती
जाहिसँ जनमिते भ' जाइत छैक एगो पूज्य
आ दोसर मोची।

•

नहि डरब

सही-गलत पहिचानक बोध अछि हमरा
हम दिनकेँ राति आ रातिकेँ दिन नहि कहब

'साँचकेँ आँच' नहि कहैत छथिन विद्वान् सभ
छी खड़ा सोना तखन हम नहिए टा जरब

एहि लोकतंत्रमे बाजब हमर अधिकार अछि
तखन हम चुपचाप अन्याय कियैक सहब

हेताह कियो जे डरताह गोली-बन्दूकसँ
छी हम साहित्यकार सरकारसँ नहि डरब।

•

हौ भाइ बौधू आबहु जागह

हौ भाइ बौधू, बुझहक पांड़ेजीक राजनीतिक खेल-बेल
झाजी छथिन विधायक प्रत्याशी
ताहि लेल रखने छथुन तोरासँ एतेक मेल
पूबारि टोलक मिसरजीकेँ सेहो छनि पूरा विश्वास
पछबारि टोलक मलाह-दुसाध-मुसहरक वोट पर
हमरे अछि अख्तियार
आ ओम्हर पुजारीजी सेहो बनल छल चुनावक ठीकेदार
तोरा दामो नहि बुझह देतह
आ बेचि लेतह तोहर मताधिकार
ई सभ छथिन फाँड़ बान्हिक' तैयार
झाजीकेँ पठबय लेल सत्ताक दरबार

आ तोँ सभ भरि चुनाव पीबैत रहह तारी-दारू
खाइत रहह माछ-भात
कियैक तँ आब तोँ सभ निहारयबला छह
पाँच बर्ख तक हुनकर सभक मुँह
पांड़ेजी खेतह तोहर हक-अधिकार
पुजारीजी खेतह गाम भरिक विकास
मिसरजी खेतह सड़क-पुल-परिवहन
आ तोँ सभ बनल रहबह एहिना
सभदिन दलित-दमित, शोषित-वंचित, निर्धन

हौ, आबहु बुझहक ओकर सभक षड्यंत्र
तोरे वोटसँ ओ सभ बनि रहल छल राजा
आ तोँ सभ रंक
कारण, ओ एक आदमी मनबा लैत छह

तोरा पूरा टोलसँ अपन गप्प
आ तोँ पूरा टोल मिलिक' ओहि टोलक
नहि खसबा सकैत छह अपना इच्छानुसारे एकटा मत
आ यैह छह बभनटोली आ सोलकनक टोलामे
सभसँ बड़का फर्क
तोँ सभ एखनो धरि नहि बुझै छहक
ओकर सभक छल-कपट

हौ, एनामे कोना हेतैक बाबा भीमक
सपना साकार
जाधरि तोँ सभ नहि बुझबहक
अपन संवैधानिक अधिकार
दारू-मुर्गा आ दू-चारि सए रुपया लेल
बेचि दैत छहक अपन ईमान
बिनु सोचने-गुनने क' दैत छहक मतदान
तखन कोना हेतह तोहर कल्याण
आ तोरा समाजक उत्थान

हौ भाइ बौधू, आबहू जागह
नहि तँ बापे-पुरखा जकाँ सहय पड़तह
बेटा-पोताकेँ अपमान
बनल रहबह सभदिन ओकरा सभक गुलाम।

•

सुनू यौ वरिष्ठ साहित्यकार

सुनू यौ वरिष्ठ साहित्यकार
भलेहि अहाँ हमरा दलित साहित्यकार मानि
कयने रहू साहित्यकारक समाजसँ एक कात
आ धकेलने रहू एकान्तक अन्हार मसानमे
मुदा हम एक ने एक दिन चमकब अबस्स
ध्रुवतारा बनि सगर जहानमे

अहाँ राखू अपन पुरस्कार आ सम्मान
मंच-माला-पाग लेल हम नहि मचबैत छी गर्दमिसान
अहाँक संस्थान-प्रतिष्ठानसँ हमरा नहि अछि
कोनो काम
मुदा सुनि लिअ
एक ने एक दिन हमरा कृतिकेँ लोक अबस्स देतैक
अपना हीयामे स्थान
आ हमरा नजरिमे एहिसँ पैघ नहि होइत छैक
एगो साहित्यकारक लेल कोनो दोसरा सम्मान

अहाँ लेखक सभक बनल रहू मठाधीश
साहित्यमे चलबैत रहू अपन राजनीति
हमरा नहि लगैत अछि कनिको तीत
मुदा जखन आने साहित्यकार जकाँ
अहाँ हमरो बनबय चाहैत छी अपन चाटुकार
दबाबय चाहैत छी हमर सच्च लिखबाक साहस
तखन नहि पसिन पड़ैत अछि हमरा
अहाँक मठाधीशबला व्यवहार
कियैक कि हमरा अछि आत्मविश्वास
एक-ने-एक दिन हमर निर्भिकताकेँ
अबस्स मिलतैक प्रबल जनाधार। •

गम्भीर प्रश्न

इनकिलाब-जिन्दाबाद
एहि आवाजसँ शहीद भगत सिंह
ब्रिटिश हुकूमतक खिलाफ
कयने रहथिन क्रान्तिक शुरूआत
ई अछि किसान-मजूरक आवाज
छात्र-नौजवानक आवाज
एहि आवाजसँ दलित-दमित, शोषित-वंचित
अपन हक-अधिकार लेल
करैत रहैत अछि किलोल
एहि आवाजसँ किछु जीबैत मनुक्ख
मचौने रहैत अछि गर्दमगोल

एहि आवाजकेँ सुनि कहिओ
सत्ता, सामन्त आ बड़का-बड़का पूंजीपति-महंथ
सभक हीयामे पैसि जाइत छल अदंक
आ एहि आवाजक दम पर भेल अछि अपन देशो स्वतंत्र
ताहि आवाजकेँ आइ-काल्हि बन्न कराबक लेल
सत्ता क' रहल अछि षड्यंत्र

मुदा हम ताहिसँ नहि छी चकित
कियैक तँ
सत्ताकेँ सदति आदति छैक चलब कुचक्र
परन्च सत्ताक षड्यंत्रमे फँसि
जँ आम जनता, आम आदमीक आवाज
इनकिलाब-जिन्दाबादकेँ
बन्न करबाक लेल तैयार भ' जाइत अछि तुरन्त
तँ हमरा जनतबसँ ई बनि जाइत अछि
लोकतंत्र लेल एगो गम्भीर प्रश्न। •

बाबा दण्डोत बच्चा जय सियाराम

ओ टीक रखने, तीन धरिया चानन कएने
सदिखन जपैत रहैत छथि सियाराम
नित दिन भोर-साँझ जाइत छथि मन्दिर
गबैत छथि आरती
बजबैत छथि मन्दिरक घण्टा
सनातन धर्ममे हुनका पूरा छनि आस्था
तखन स्वाभाविक छैक जे ओ मानबे करताह
ऊँच-नीच, छुआछूत, जाति-पाति आ वर्ण-व्यवस्था

मुदा बुझल अछि हमरा हुनकर जुआनीक चालि-चलन
छोटछीन गिरहथ छलाह आ रखैत छलाह
बड़का जमींदारक दंभ
मोचण्ड एतेक कि ककरो अपना खेती-पथारीमे
घास-पात करैत देखि
आकि ककरो बकरी-छकड़ीकेँ अपना जजातमे
पैसैत देखि असुलैत छलाह गरीब-गुरबासँ
क्षतिसँ दस गुणा बेसी दण्ड
आइ ताहि जातिसँ छुआइत छनि हुनकर देह
ओहि जातिक एकटा विधवा जनानीसँ लगौने रहला
जुआनी भरि अनैतिक स्नेह
चोरा-नुकाक' खाइत-पीयैत, सुतैत-बैठैत रहला
एकहि संग
आ आइ जखन जाँघक ताकति भ' गेलनि खतम
तँ ध' लेलाह कुटी, बनि गेलाह महन्थ
ओनाहितो पतितकेँ पावन करयबला होइते छैक
सनातन धर्म

हिनको कुकर्म भ' जेतनि क्षम्य
किएक तँ एहि धर्ममे बलात्कारी-दुराचारी सभ
बनि जाइत छैक भगवान
एहि धर्ममे क्रूर अत्याचारी सभ कहबैत छथि महान
एहि धर्ममे लिंग-योनि पूजलासँ मिलैत छैक वरदान
शोणितसँ स्नान
एहि धर्मक कोनो देवी-देवता अपवादे हेताह
जे नहि लेने होथिन किनको प्राण
जाधरि सनातन धर्ममे छी, विवशता अछि
हमरो देबहि पड़त एहि कुर्सी सभकेँ सम्मान
निमाहे पड़त सनातन धर्मक ओ परम्परा
'बाबा दण्डोत बच्चा जय सियाराम।'

•

राम नहि छथि हमर आदर्श

कहिओ काल हम सोचैत रहैत छी एकान्तमे
तुलसी-वाल्मीकि कतेक ओझरौने छथि रामक
चरित्रकेँ रामायणमे
एक जगह घायल गिद्ध जटायुक सेवा-सत्कार
आ उपचार करैत देखाक' ओ रामक व्यक्तित्वकेँ
प्रस्तुत कएने छथि उदार-दयावन
आ दोसर जगह निर्दोष हिरणक प्राण लेबाक कारणेँ
तनैत छथि तीर-कमान
जाहिसँ मिलैत अछि
हुनकर क्रूरता आ हिंसक होएबाक प्रमाण

स्त्री विमर्श पर सेहो रामकेँ कएने छथि
तुलसी-वाल्मीकि कठघरामे ठाढ़
हँ, एक दिस करैत छथि ओ अबला अहिल्याक उद्धार
मुदा दोसर दिस सीताक वनवास
सूर्पनखाक नाक-कान पर आघातसँ स्पष्ट बुझना जाइत अछि
जे ओ छलाह घोर पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकताक शिकार

आ दलित विमर्श पर ओ एकदमसँ बुझना जाइत छथि
स्वार्थी आ सत्तालोलुप
जेना दलित प्रेम दर्शाबय लेल
एखनुका मनुवादी नेता सभ खाइत छथि
कोनो गरीब-दलितक घर जाक'
आ रोहित वेमुला सन दलित प्रतिभाकेँ
विवश क' दैत छैक आत्महत्या करबाक लेल
षड्यंत्रक जाल बिछाक'

तहिना ओ शबरीक अँइठ-कुठार बैर खाक’
देखबैत छथि दुनियाँकेँ दलितक प्रति प्रेम-सिनेह
मुदा दलित ऋषि शम्बूकक हत्या बला प्रसंगसँ
जगजिआर भ’ जाइत छनि हुनकर दलितक प्रति घृणा-विद्वेष

जानि ने रामायण फूइस अछि आकि यथार्थ
ई अछि एगो दीगर बात
मुदा धरि मनुवादी छलाह राम से अछि हमरा पूरा विश्वास
तखन हम दलित कवि कोना मानि सकैत छी
हुनका अपन आदर्श

विरोधाभाससँ भरल हुनक व्यक्तिवमे हमरा
कनिको नहि देखाइत अछि मर्यादा पुरोषत्तमक झलक...!

•

हारि जाइत छी बेर-बेर

हौ भाइ बौधु, हम लड़ि सकैत छलहुँ
अपना दुश्मनसँ लड़ाइ
देखा सकैत छलहुँ ओकरा पराजयक मुँह
ढाहि सकैत छलहुँ ओहि घृणा-विद्वेषक देबालकेँ
जकरा अढ़सँ ओ हमरा ऊपर बरसाबैत रहैत अछि
शब्दक विषवाण
ध्वस्त क' सकैत छलहुँ झूठ-फूइसक आधार पर
बनाओल ओकर किलाकेँ
जाहिक छत्रछायामे बैसि ओकरा भ' जाइत छैक
'हम देवता छी'क गुमान
मुदा विवश भ' जाइत छी, जखन देखैत छी
हमर अपने समाजक लोककेँ
बनल अछि ओकर किलाक पहरेदार
हमरासँ लड़बाक लेल उताहुल रहैत अछि
देवालयक अढ़मे हथियार लेने हमर अपन-परार
तखन बिनु लड़ने करय पड़ैत अछि आत्मसमर्पण
राखय पड़ैत अछि दुश्मनक आगू अपन हथियार
अँय हौ बौधु भाइ, हम कतेक छी लचार
सत्य पर रहितहु असत्यसँ करय पड़ैत अछि
बेर-बेर हारि स्वीकार

जानि नहि कहिया हेतैक हमरा समाजक लोककेँ
साँच-झूठक भान
जानि नहि कहिया धरि रहतैक हमर बन्धु-बान्धव सभ
अपन हक-अधिकारसँ अन्जान
जानि नहि कहिया धरि मानैत रहतैक हमर अपन-परार सभ
अपना पुरखाक हत्यारा सभकेँ भगवान

जानि नहि कहिया धरि बनल रहतैक
ई रक्तबीजक सन्तान सभ मनुवादक गुलाम
अँय हौ बौधु भाइ, एहि बइमान सभकेँ
कोना बुझाओल जाइ आर्य-अनार्यक जातिक इतिहास
आ कोना समझाओल जाइ कि वर्चस्वक संस्कृतिकेँ
षड्यंत्रक तहत कोना भ' रहल छैक
वैदिक कालसँ ल' क' एखन धरि देवताक क्रमिक विकास
हौ, ओहि मनुवादी षडयंत्रकेँ कहैत छैक ई सभ अपन धर्म
आ ओकर फूइस कल्पना पर रखैत छैक आस्था-विश्वास
तखन ई धर्मांध सभ कोना मानतैक हमर बात

हौ सच्च पूछ' त' दुश्मनसँ हम मिसिओ भरि नहि डेराइत छी
मुदा अपना लोकक नासमझीक कारणे हम
बेर-बेर हारि जाइत छी।

•

की ईश्वर अछि

हम सुनि रहल छी
अपन अन्तःकरणक अन्तर्द्वंद्वकेँ
आस्तिकता आ नास्तिकता केर बीच चलि रहल जंगकेँ
ईश्वर अछि आस्था आर विश्वास जोड़ लगा रहल अछि
ईश्वरक अस्तित्वकेँ नकारैत
तर्क-ज्ञान एकरा दबा रहल अछि
हम तथस्ट आ निष्पक्ष छी
प्रतिक्षारत छी
की ईश्वर अछि
सवाल पर सवाल भ' रहल अछि
जवाब सेहो नहि पाछाँ हटि रहल अछि
यदि ईश्वर अछि तँ हुनक स्वरूप की थिक
हुनकर रंग-रूप की थिक
ओ अदृश्य कियैक छथि
हुनकर वास कतय छनि
जवाब मिलैत अछि
ओ निराकार छथि
हुनकर नहि कोनो रूप-आकार छनि
ओ सर्वशक्तिमान छथि
ओ सर्वज्ञानी, सर्वव्याप्त छथि
हरेक कण-कणमे हुनकर निवास छनि
ज्ञान रहस्यमयी मुस्कान छोड़ैत अछि
आ तर्क-जवाबकेँ नकारैत कहैत अछि—
हम अहाँक फूइसमे फँसयबला नहि छी
बिनु सबूतक किछु मानयबला नहि छी
ई प्राचीन किंवदन्ती अछि

सामन्त, शोषक जाहिसँ दलित, दमित, शोषत, वंचितकेँ
दबबैत छल ओ उक्ति अछि
आस्था आरोप लगबैत छैक
अहाँ बड़ दम्भी, अभिमानी छी
अपन पालनकर्त्ताकेँ नहि मानयबला बदगुमानी छी
आ विश्वास डराबैत कहैत छैक—
अहाँकेँ स्वर्ग नहि नर्क मिलत
नास्तिकताक कारणेँ भगवान तेलमे भूजत
ज्ञान कने गम्भीर भ' कहैत छैक
हम अभिमानी नहि, स्वाभिमानी छी
अहाँक पाखण्ड, आडम्बरकेँ नहि मानयबला
यथार्थ ज्ञानी छी
अहाँ हमरा कल्पित बातमे नहि ओझराउ
जँ अहाँक ईश्वर सर्वशक्तिमान अछि
तँ हुनकासँ कहि अहाँ क्रूर अत्याचारी सभक
आत्मामे करुणा जगबाउ
एहि धरती पर होबयबला जघन्य पाप सभकेँ मेटबाउ
गरीब-मजूर पर होबयबला अन्याय-अत्याचार पर
लगाम लगबाउ
ऐँ यौ, यदि अहाँ खराब नहि मानी तँ
हम एगो गप पूछी
यदि ओ पालनकर्त्ता छथिन
तखन बाढ़ि, विपदा, अकालमे अनगनित लोक
भूखसँ कियैक मरैत छैक
आब अहाँ कहब, एही तरहेँ जयबाक ओकर भाग्य
आकि भगवानक विधान छैक
आ हम कहब जखन ओ कोनो विधानमे बान्हल छथि
तँ कोना सर्वशक्तिमान छथि
आस्था खिसिआइत छैक
विश्वास आक्रोशित भ' जाइत छैक

की अहाँ सृष्टिकर्त्ताकेँ नहि मानैत छी
की अहाँ ब्रह्माण्डक नियत्रंणकर्त्ताकेँ नहि जानैत छी
अहाँ अज्ञानी छी, विधर्मी छी
अपन धर्मग्रन्थकेँ नहि पढ़ैत छी
किन्साइत एही लेल अहाँ ईश्वरक अस्तित्वकेँ
नकारि रहल छी
तर्क समझाबैत कहैत छैक
जे मनुक्खसँ मनुक्खकेँ घृणा सिखबैत छैक
हम ओकरा ग्रन्थ नहि मानैत छी
जे कथा कल्पित छैक ओकरा प्रमाण नहि
स्वीकारैत छी
हमरा तँ अहाँक धर्मग्रन्थे क्रूर विचारक आधार लगैत अछि
एकलव्यक औंठा आर शम्बूक वधक स्वयं साक्ष्य दैत अछि
अहाँ की कहैत छियैक
जे सृष्टिक रचना अहाँक ईश्वर कयने छथि
ई अहाँक पोंगापन्थी विचार अछि
आ हमरा लग अकाट्य तर्कसँ भरल
'जीव उत्पत्ति आ विकासवादी सिद्धान्त'
जेहन चार्ल्स डार्विनक विचार अछि
पृथ्वी बनल अछि सभ तरहक पदार्थक
नीहारिकाक आकारमे अचानक मिश्रणसँ
नहि कि अहाँक ब्रह्मकेँ निर्वातमे साँस लेबयबला
कल्पित कथाकारक परिश्रमसँ

हमरा जवाब मिलि गेल, आब अहाँ लोकनि जानी
तर्क-ज्ञानक सुनी आकि विश्वास-आस्थाक मानी।

•

पीपरक गाछ

अदौ कालसँ एगो फूइस मान्यता प्रचलित छैक
पीपरक गाछमे देवी-देवता करैत छैक निवास
एहि गाछ पर रहैत छैक भूत-प्रेत, ब्रह्मपिशाच
एकरा काटलासँ भ' जाइत छैक वंशक नाश
एकरा पूजलासँ रहैत छैक ग्रह-नक्षत्र शान्त
लोक भय-आतंकक पर्याय बना देने छैक एहि गाछकेँ
लोक पाखण्ड-आडम्बरक-अन्धविश्वासक ताज
पहिरा देने छैक एहि गाछकेँ
जाहिसँ एहि साधारण गाछकेँ भ' गेल छैक
'हम भगवान छी' केर अहंकार
आ एहि अहंकारमे ई कयने जा रहल अछि
अपन अन्धविकास
बढ़ेने जा रहल अछि वर्जितो क्षेत्रमे अपन डाढ़ि-पात
अपन पड़ोसी गाछ सभ पर जमौने जा रहल अछि
अनैतिक अधिकार
ओनाहितो
पाखण्ड-आडम्बर-अन्धविश्वासक होइते छैक
तीव्र विस्तार
जखनकि ई गाछ नहि दैत छैक फल-फूल
आ ने एकर लकड़ी होइत छैक उपयुक्त
आ एहिना पीपरक गाछ जकाँ स्वयंकेँ देवता
घोषित क' लैत छैक कतेक मनुक्ख
जकर मुख्य उद्देश्य होइत छैक आमजन
बनल रह' कूपमण्डुक
हमरा करैत रहय पूजा-पाठ
चढ़बैत रहय हमरा फूल-पान-प्रसाद

सच्च पूछी तँ परजीवी होइते छैक चतुर-चालाक
मुदा पीपरक गाछमे लाख अवगुण रहितहु
एगो छैक विशेष गुण
ई मानव हित लेल छोड़ैत रहैत छैक
दिन-राति ऑक्सीजन
जखन कि परजीवी मनुक्ख सदिखन झूठ-फूइस
छल-प्रपंच आ आमजनक शोषण-उत्पीड़न क'
बढ़ाबय चाहैत रहैत छैक अपन धन...।

•

विरोध तँ हमर होत

विरोध तँ हमर अबस्स होत
कियैक तँ हम पाखण्ड-आडम्बर पर
करैत रहैत छियैक जबर्दस्त चोट
लिखैत रहैत छियैक मान्यता-परम्परासँ हटिक'
प्रतिरोध करैत रहैत छियैक मनुवादी संस्कृतिक डटिक'

ओनाहितो हमर आदर्श अछि
आम्बेडकर, फुले, पेरियार
हम चलैत छी सदिखन
बुद्ध, नानक, कबीर, रविदासक बताओल मार्ग
आ हिनका सभकेँ अपना समयमे खूब भेल रहनि विरोध
तखन हमर नहि होत विरोध से कोना राखी भरोस

विरोध होयत से पहिनहिसँ हम मानिक' चलैत छी
साँच लिखैत छी, सीना तानिक' चलैत छी
हँ, तइयो किछु धर्मांध उन्मादी लोक हमरा पर
क' सकैत अछि आघात
एकर माने ई नहि जे डरसँ हम छोड़ि दी
सच्च लिखबाक सहास
परिणाम जे हेतैक देखल जेतैक
हम भविष्यक चिन्तामे नहि क' सकैत छी वर्तमान खराब
हम साहित्यकार छी, हमर साहित्यिक धर्म अछि
नव सोच, नव चिन्तनसँ करी रुढ़ कुप्रथा पर आघात
जाहिसँ हेतैक देश-समाजक विकास।

•

हम लिखब मानवीय संवेदना

अहाँ लिखू धर्म, संस्कृति, फूल-पात
अहाँ लिखू हास्य-व्यंग्य, गीतनाद
अहाँ लिखैत रहू आरती-वन्दना
अहाँ करैत रहू कुलश्रेष्ठ साहित्यकारक
पूजा-पाठ, आराधना
अहाँ भरल-पूरल लोक छी
अहाँक कन्हा पर जिम्मेवारी अछि
पुरखा लोकनिक परम्पराकेँ बचाक' राखू कहुना

अहाँ पर धर्म रक्षाक उत्तरदायित्व अछि
सुनबैत रहू लोककेँ सूक्त, छन्द, मंत्र, श्लोक
लिखैत रहू धर्मग्रन्थ पर टीका-टिप्पणी, भाष्य
समझाबैत रहू रामायण, महाभारत, पुराण, गीता
स्वर्ग-नर्क, मोक्ष, परलोक पर दैत रहियौक उपदेश
अपने छी स्वघोषित भू देव

मुदा जतय धरि हमर गप अछि
तँ हम छी दलित, दमित, शोषत, वंचित लोक
हम नान्हिटासँ देखने छियैक भूख, गरीबी, बेमारी
सहने छी अपमान, अनादर, तिरस्कार
मेहनति-मजूरी अछि हमर रहन-सहन, आचार-विचार
तखन हमर-अहाँक लेखनी एक कोना भ' सकैत अछि भाइ

हमरा धर्म-संस्कृतिसँ बेसी महत्वपूर्ण बुझना जाइत अछि
मानवीय संवदेना
हमरा आरती-वन्दनासँ बेसी महत्वपूर्ण बुझना जाइत अछि

शोषक-उत्पीड़कक भर्त्सना
हमर हक-अधिकारक आगू निरर्थक बुझना जाइत अछि
लिखब फूलपात
हमरा छन्द, मंत्र, श्लोक सभ बुझना जाइत अछि
अभिशाप

सच्च पूछी तँ अहाँक धर्म हमर आत्मसम्मान पर
एतेक ने कयने अछि कुठाराघात
जे आब अहाँक धर्मग्रन्थ बुझना जाइत अछि हमरा
यातना शिविरक द्वार
आ स्वर्ग-नर्क, मोक्ष-परलोक एकदमसँ कोरा बकवास
अहाँक भगवान पर नहि अछि हमरा मिसिओ भरि विश्वास।

•

बौआ तरि जइबेँ

आगिसँ नहि खेल बौआ, नहि तँ जरि जइबेँ
उन्मादी शहर छैक, बचिएक' रह नहि तँ मरि जइबेँ

राजनीतिमे नहि छैक इमान, तोँ कहल हमर मान
नहि तँ नेता सभक चक्करमे फँसि जइबेँ

छोड़ जाति-धर्मक खेल, राख सभ मनुक्खसँ मेल
धर्मान्ध भेला पर बौआ कटि जइबेँ

छै फूसिओकेँ स्वतंत्र, लोकतंत्रमे भरल छैक षड्यंत्र
बेसी उड़ला पर देशद्रोहीक केसमे फँसि जइबेँ

लड़ाइ-झगड़ासँ नहि हेतौक समाधान, गप्प हमर मान
रखबेँ शान्त-अहिंसक विचार तँ बौआ तरि जइबेँ।

•

देश बदलि रहल छैक

जहियासँ भेलय लोकक
हाथे-हाथ एन्ड्राइड मोबाइल
तहिआसँ अपन देश
बदलि रहल अछि भाइ
आब देशमे देशप्रेमी सभक संख्या
बढ़य लागल अछि
लोकसभ फेसबुक, व्हाट्सप्प, ट्वीटर पर
अपन देशभक्तिक रंग देखाबयमे लागल अछि
सोशल मीडिया पर चलि रहल छैक
अन्धराष्ट्रवादक मिसाइल
बिनु लड़ने जीति जाइत अछि
लोकसभ पाकिस्तान संगे लड़ाइ
आब अपन देश बदलि रहल छैक भाइ

एन्ड्राइड मोबाइल अयलासँ
धर्मचारी सभक संख्या सेहो बढ़ि गेल अछि
आब लफुओ छौंड़ा सभ मुल्ला-पुजारी भ' गेल अछि
धर्मक रक्षा लेल किछु गोटे गुण्डा
तँ किछु मवाली भ' गेल अछि
आइ-काल्हि बहुतोकेँ धर्मक उन्मादबला
बेमारी भ' गेल छैक
ई सभ घृणा-विद्वेष पसारय लेल
राति-दिन रहैत अछि फेसबुक पर लाइव
आब अपन देश बदलि रहल छैक भाइ

ई मोबाइल समाज आ राजनीतिमे
अनलक अछि एगो बड़का बदलाव

आइ-काल्हि मोबाइल पर चलैत अछि
विचारधाराक लड़ाइ
मोछ एँठैत मुस्तण्डा सभ क' रहल अछि
जाति-पातिक राजनीति
सामाजिक सद्भावनाकेँ क' रहल अछि क्षति
एहि गृहयुद्ध सन स्थिति लेल
सरकारो कसूरवार अछि
आइटी सेल बनाक' ओ स्वयं क' रहल अछि दुष्प्रचार
सोशल मीडियामे खूब बहैत अछि
अफवाहक बिहाड़ि
आब अपन देश बदलि रहल अछि भाइ!

•

कविता प्रार्थना नहि थिक

कविता स्तुति नहि थिक सत्ता आ सरकारक
कविता प्रार्थना नहि थिक कविक उद्धारक
आ ने ई चापलूसी करैत अछि सम्मान आ पुरस्कारक
ई कहैत अछि हक-अधिकारक गप
सच्चसँ नहि होइत अछि कनिको टस-मस
ई होइत अछि गरीब-गुरबाक आवाज
ई तोड़ैत अछि जर्जर भेल रीति-रिवाज
ई ढाहैत अछि पाखण्ड-आडम्बरक देबाल
ई बढ़बैत अछि टूटल मोनक आत्मविश्वास
ई दैत अछि अन्यायी-अत्याचारी सभसँ लड़बाक साहस

कविताकेँ एसीमे रहब अनसोहाँत बुझना जाइत छैक
कविताकेँ पार्टी-शार्टी फुटली आँखिए नहि सोहाइत छैक
एकरा रहय दियौ पाथर तोड़ैत मजूरनी संग लुक-बसातमे
एकरा ठिठुरय दियौ हल्कुक संग पूसक जाड़क रातिमे
एकरा गाबय दियौ सद्भावना-सौहार्द्रक गीत
एकरा लगबय दियौ मानवता संग मीत

एकरा नहि रंगियौ धर्म-मजहबक रंगसँ
एकरा नहि बन्हियौ जातिक दम्भसँ
कविताकेँ रहय दियौ निर्बंध
एकरा घुमय दियौ स्वच्छन्द
गिरहतक खेत-खरिहानमे
किसानक दुअरा-दलानमे
गरीब-गुरबाक टुटली मड़ैयामे
दलित-दमित, शोषित-वंचितक टोल जाइबला
गामक बाट एकपेड़ियामे

एकरा सुनय दियौ लोकक दुख-व्यथा
एकरा लग छैक सांत्वना-सहानुभूति अथाह
ई कनैत लोककेँ हँसा दैत छैक
ई भुतिआयल लोककेँ बाट देखा दैत छैक
कविता हरेक व्याधिक दवाइ छैक भाइ
ई मुइलो लोकक हाथमे क्रान्तिक झण्डा थम्हा जाइत छैक।

•